R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

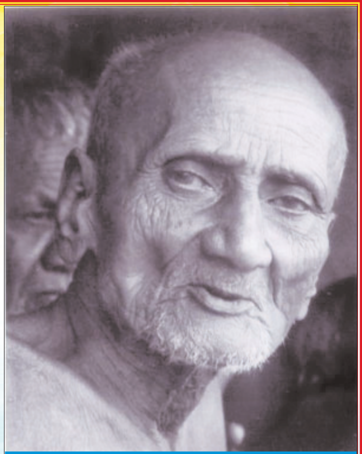

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

विश्व नमोकार महामंत्र दिवसः जब एक मंत्र, विश्व की धड़कन बन गया | पृष्ठ 06 पर

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 25 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 13 अप्रैल 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा जैन इंस्पिरेशनल यूथ अवार्ड एवं जैन जनगणना जागृति अभियान का भव्य आयोजन

पवन जैन गोधा, राष्ट्रीय महामंत्री-श्री भा. दिग. जैन महासभा

दिल्ली। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा जैन समाज के उत्साही युवकों की उत्कृष्ट समाज सेवा को प्रोत्साहित करने हेतु ''जैन जनगणना जागृति अभियान'' एवं ''जैन इंस्पिरेशनल यूथ अवार्ड (JAIN INSPIRATIONAL YOUTH AWARD)'' समारोह का भव्य आयोजन 5 अप्रैल 2026, प्रातः 10:00 बजे, एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, संसद मार्ग, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। यह गरिमामय कार्यक्रम राष्ट्रीय संत परंपराचार्य श्री प्रज्ञ सागर मुनिराज के सानिध्य में तथा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, श्री चंद्र प्रकाश सिंघवी एवं श्री प्रदीप जैन आदित्य द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। परंपराचार्य श्री प्रज्ञ सागर मुनिराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आज का युवा ही जैन धर्म को आगे बढ़ाएगा। जैन जनगणना जागृति अभियान में युवाओं की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। हम सब केवल जैन हैं और जैन धर्म की रक्षा हेतु जागरूकता ही सबसे बड़ी आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 2 पर......

।।श्री महावीराय नमः।।
WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 यूरोपियन देशो की सैर
18 May, 2 June, 16 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
GERMANY, SWITZERLAND
AUSTRIA, AMSTERDAM
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

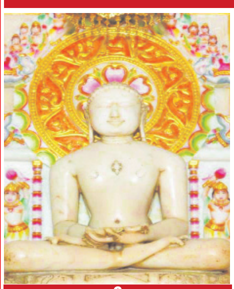

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा
शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।
हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com
— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

शेष पृष्ठ 1 का...

➡ श्री तरुण चुग ने बताया कि देश भर में आचार्यश्री विद्यानंद जी महाराज शताब्दी समारोह आयोजित हो रहे हैं तथा नई शिक्षा नीति पर जैन आचार्यों के सिद्धांतों का प्रभाव है।

➡ सांसद श्री राधा मोहन अग्रवाल ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति से आगामी जनगणना में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

➡ केंद्रीय मंत्री श्री रामदास अठावले ने जैन एवं बौद्ध दर्शन की समानता बताते हुए भगवान महावीर के संदेश को विश्व तक पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया।

➡ केंद्रीय मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे ने देश की समृद्धि में जैन समाज के योगदान की सराहना करते हुए युवाओं को अहिंसा के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया एवं युवा मंत्रालय से सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में जिया (JIYA) के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत संगीत ने सभागार में उपस्थित सभी जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह में समाज के अनेक प्रतिभाशाली युवाओं एवं व्यक्तियों को उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु ''जैन इंस्पिरेशनल यूथ अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। इनमें प्रमुख रूप से- आकाश दोषी, विष्णु शंकर जैन, ऋषभ जैन, धर्मेंद्र शाह, डॉली जैन, विकास जैन, डॉ. पीयूष जैन, हितेश भांड्या, सजल जैन, चेतन जैन, मानव दोषी, नमन शाह, पवन जैन गोधा, राहुल जैन, संयम जैन, ऋषभ जैन सी. ए., श्रेयस जैन, शुभम वेदांगे, सिंघई मोहित जैन, Sqn leader समंकमत नूपुर जैन, स्तुति जैन, पर्वतारोही - याशी जैन तथा दुबई के महान समाजसेवी धीरज जैन को सम्मानित किया गया।

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में जैन समाज के प्रत्येक वर्ग से जैन जनगणना जागृति अभियान में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। उन्होंने कहा आज का युवा ही कल के जैन समाज का सशक्त कर्णधार है। ''युवाओं पर यह महत्वपूर्ण दायित्व है कि वे गांव-गांव एवं शहर-शहर जाकर समाज में जनगणना के प्रति व्यापक जागरूकता उत्पन्न करें और प्रत्येक जैन परिवार को अपनी सही पहचान दर्ज कराने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने समाज के सभी सदस्यों से आग्रह किया कि आगामी जनगणना में-धर्म के कॉलम 6 में जैन तथा 10A में प्राकृत तथा 10B व 10C में दूसरी भाषा का उल्लेख करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि समाज की वास्तविक जनसंख्या ही हमारी शक्ति है, जिसके आधार पर हमें सरकारी योजनाओं का लाभ तथा विधि निर्मात्री संस्था में समुचित प्रतिनिधित्व मिल सकेगा। यदि जनगणना में हमारी सही संख्या दर्ज नहीं होती, तो हमारी संस्कृति, परंपरा एवं धरोहर के संरक्षण हेतु सशक्त आवाज उठाना कठिन हो जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि जैन समाज की वास्तविक संख्या करोड़ों में होने के बावजूद, गलत आंकड़ों के कारण समाज को अपेक्षित राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक लाभ नहीं मिल पाते हैं। अंत में उन्होंने युवाओं से विशेष आह्वान करते हुए कहा कि वे इस अभियान को एक जन-आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाएं और समाज को एकजुट कर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

समारोह में 78 युवाओं को उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु उन्हें जिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री-श्री पवन जैन गोधा जी ने बताया कि जैन समाज की वास्तविक जनसंख्या लगभग 4 करोड़ के आसपास है, किन्तु सरकारी आंकड़ों में सही रूप से प्रतिबिंबित न होने के कारण समाज को अपेक्षित राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

उन्होंने समारोह में उपस्थित केंद्रीय मंत्रियों, सांसदों एवं विशाल जन समूह का आभार व्यक्त करते हुए, उनका हार्दिक अभिनंदन किया। जैन युवा आज के समारोह के विशिष्ट अतिथियों से प्रेरणा ग्रहण कर आगामी जनगणना कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाये।

उपस्थित गणमान्यः इस समारोह में महासभा के अनेक पदाधिकारी जिनमें कार्याध्यक्ष-श्री प्रकाश चंद्र जैन बड़जात्या, राष्ट्रीय महामंत्री श्रुत श्री शरद राज जैन कासलीवाल, श्री पुनीत जैन, श्री गजेंद्र जैन बज, डॉ. रमा जैन, श्री अशोक जैन चूड़ीवाल, चंद्रप्रकाश जैन, श्री योगेश जैन, श्री इंद्रेश जैन, श्री श्यामलाल जैन, श्री विनीत जैन, श्री स्वराज जैन, श्री अलोक जैन, श्री विकास जैन, श्री प्रकाश जैन वोहरा, श्री मुकेश जैन, आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सम्मान, स्नेह और संकल्प का संगमः गजराज जैन गंगवाल जी का जन्म दिवस बना प्रेरणा का पर्व

स्वराज जैन, दिल्ली

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के केंद्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी का जन्म दिवस अत्यंत हर्षोल्लास, आत्मीयता एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। यह अवसर स्नेह, सम्मान और संगठनात्मक एकता का सुंदर प्रतीक बन गया। इस शुभ अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा जी, श्रुत संवर्धिनी-राष्ट्रीय महामंत्री श्री शरदराज जैन कासलीवाल जी एवं ट्रस्टी श्री योगेश जैन जी उपस्थित रहे। सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने आदरणीय गजराज जैन गंगवाल जी को जन्म दिवस की हार्दिक बधाई एवं मंगल कामनाएँ अर्पित कीं। समारोह के दौरान उन्हें स्नेह एवं सम्मान के प्रतीक स्वरूप एक सुंदर पुष्प गुच्छ एवं अत्यंत आकर्षक मोमेंटो भेंट किया गया। इस मोमेंटो की विशेषता यह रही कि यह ''गज'' (हाथी) के स्वरूप में था, जो उनके नाम ''गजराज'' का सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है।

इस भावनात्मक उपहार के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि जिस प्रकार गज अपनी दृढ़ता, गरिमा और प्रभावशाली उपस्थिति के लिए जाना जाता है, उसी प्रकार आदरणीय गजराज जैन गंगवाल जी का सशक्त नेतृत्व, ओजस्वी वाणी एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण महासभा को निरंतर नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करता रहे। इस अवसर पर महासभा के कार्यकर्ताओं ने भी आदरणीय गजराज जैन गंगवाल जी को पुष्प भेंट कर हृदय से शुभकामनाएँ देते हुए अपने स्नेह, श्रद्धा एवं सम्मान का भाव व्यक्त किया। यह अवसर न केवल जन्म दिवस का उत्सव था, बल्कि संगठन के प्रति समर्पण, एकता और प्रेरणा का भी जीवंत उदाहरण बना। जैन गजट परिवार श्री गजराज जी गंगवाल के जन्म दिन पर उनके स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना करता है।

छाछ वितरण किया गया

श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

भ. महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा पाण्डिचेरी द्वारा लोगों को ''जियो और जीने दो'' का सन्देश देते हुए और गर्मी से राहत देने के लिए राहगीरों को छाछ का वितरण किया गया।

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन्
आचार्य श्री आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, मानसरोवर जयपुर में विराजमान हैं।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

देह छूटेगी पर पहले ही यदि देह दृष्टि छूट जाए तो कष्ट नहीं होता

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषकः R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

धर्म, समर्पण और सेवा का संगम

श्री गजराज जैन गंगवाल बने तरुणसागरम तीर्थ के शिरोमणि संरक्षक

पवन जैन गोधा
राष्ट्रीय महामंत्री - महासभा

दिल्ली। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के केंद्रीय कार्यालय में उस समय एक गरिमामय एवं प्रेरणादायी वातावरण निर्मित हो गया, जब तरुणसागरम तीर्थ के अध्यक्ष आदरणीय श्री सुनील कुमार जैन (एडवोकेट) एवं ट्रस्टी आदरणीय श्री अरुण जैन का स्नेहिल आगमन हुआ।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने दोनों अतिथियों का आत्मीयता एवं सम्मान पूर्वक स्वागत-अभिनंदन किया। इस अवसर पर परस्पर सौहार्द, धर्मनिष्ठा एवं संगठनात्मक एकता की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई।

सौहार्दपूर्ण संवाद के दौरान तरुणसागरम तीर्थ के प्रतिनिधियों ने तीर्थ के विकास, संरक्षण एवं धार्मिक गतिविधियों के विस्तार हेतु आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी से ''शिरोमणि संरक्षक'' के रूप में रू. 11,00,000 (ग्यारह लाख रुपये) के सहयोग का विनम्र आग्रह किया।

समाज एवं धर्म के प्रति अपनी अटूट निष्ठा का परिचय देते हुए आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने इस आग्रह को सहर्ष एवं सम्मान पूर्वक स्वीकार किया। उनका यह निर्णय न केवल उनकी उदारता एवं सेवा-भावना का प्रतीक है, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत भी है।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर समाज की एकता, धार्मिक मूल्यों के संवर्धन एवं भविष्य की योजनाओं को लेकर भी सार्थक एवं सकारात्मक चर्चा हुई।

निस्संदेह, यह पहल समाज में सहयोग, समर्पण एवं संगठन की शक्ति को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

संसार शरीर और भोगों को त्याग छोड़ पूरा परिवार बन गया संत

(अदभुत प्रेरणामय जीवन को जीवंत कर देने का संदेश दिया)

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता

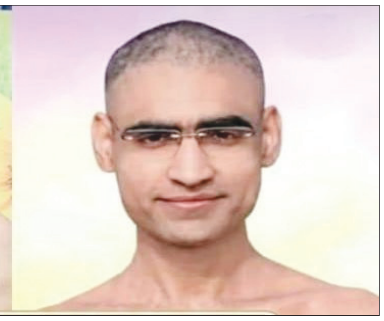

एटा (उत्तर प्रदेश)। जीवन के किसी भी पल में वैराग्य उपज सकता है, संसार में रह कर प्राणी संसार को तज सकता है। छोटा सा तू कितने बड़े अरमान है तेरे, मिट्टी का तू सोने के सब सामान है तेरे, मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समाएगी ना सोना काम आएगा ना चांदी आएगी।

एटा (उ. प्र.) के एक परिवार ने गृहस्थ जीवन त्याग कर संसार शरीर ओर भोगों का त्याग कर जैन संत बनने की मिसाल पेश की है। इसकी शुरुआत इकलौते बेटे प्रशांत जैन ने की। मेधावी छात्र रहे प्रशांत ने 2009 में आचार्य विमर्श सागर महाराज से प्रभावित होकर वैराग्य का मार्ग चुना। 2014 में अपनी बहन की शादी के बाद उन्होंने घर छोड़ दिया और नवंबर 2015 में टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) में मुनि दीक्षा लेकर 'मुनि विव्रत सागर महाराज' बन गए। बेटे से प्रेरित होकर माता-पिता ने भी सांसारिक मोह-माया छोड़ दी। 16 नवंबर 2017 को पिता मुकुल जैन ने जबलपुर में दीक्षा ली और 'मुनि विश्वांक सागर महाराज' कहलाए। इसके बाद, 3 नवंबर 2019 को दुर्ग (छत्तीसगढ़) में मां सुमन जैन ने भी क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की और 'विप्रांत माताजी' बन गई।

पूरे परिवार ने अपनी संपत्ति और सुख-सुविधाओं संसार शरीर ओर भोगों का त्याग कर दिया है। अब वे अपना जीवन भगवान महावीर के सत्य और अहिंसा के संदेश को फैलाने में समर्पित कर चुके हैं। वर्तमान में तीनों संत मेरठ में आचार्य विमर्श सागर महाराज के सानिध्य में संयम के पथ पर अग्रसर हैं। आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज तप त्याग और साधना की साक्षात मूर्ति हैं। आपके द्वारा जब 'जीवन है पानी की बूंद' मधुर आवाज में गाया जाता है तो श्रद्धालुगण भाव विभोर हो झूमने लग जाते हैं। कोटा राजस्थान में जब आपका मंगल चातुर्मास हुआ था उस समय पूरे चातुर्मास की भव्य मीडिया कवरेज मैने स्वयं की थी। जो सादगी, सरलता मुझे आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज में देखने को मिली। वास्तव में कभी नहीं भूला पाऊंगा।

मा. लोढा जी का अर्थ हीन वक्तव्य

एम. सी. जैन, पत्रकार, चिकलठाणा

5 अप्रैल 2026 के नव भारत टाइम्स में महाराष्ट्र के मंत्री महोदय मा. श्री मंगल प्रभात जी लोढा का वक्तव्य प्रसिद्ध हुआ है, उनका कहना है कि जैन धर्म हिंदू धर्म का हिस्सा है, पढ़कर सखेद आश्चर्य हुआ। जैन धर्म अत्यंत प्राचीन एवं स्वतंत्र धर्म है। भ.महावीर स्वामी अंतिम 24 वें तीर्थंकर हैं एवं भ. ऋषभदेव उर्फ भ. आदिनाथ जी प्रथम तीर्थंकर है, उनके पुत्र भरत जी के नाम से इस देश को 'भारत' नामकरण स्थापित हुआ। प्रथम तीर्थंकर का समय दस हजार वर्ष से अधिक होने का अनुमान है। विश्व के अनेक इतिहास विद्वानों ने जैन धर्म को अति प्राचीन धर्म बताया है तथा जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है, वह किसी का हिस्सा नहीं है।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

जिसकी जैसी होनहार वैसे वो होगा पार

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधांसु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
अशोक कटारिया, निवाई
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

जयपुर में आचार्यश्री वर्धमान सागरजी ससंघ एवं जैनाचार्य श्री प्रज्ञा सागरजी ससंघ के पावन सानिध्य में भ. महावीर का 2625 वां जन्म कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

धर्म सभा में बरसी महावीर की वाणी शोभायात्रा में पहली बार चले 24 तीर्थंकरों के 24 स्वर्णिम आभा युक्त रथ: रामलीला मैदान में 24 पाण्डुक शिलाओं पर हुए आदिनाथ से महावीर 24 तीर्थंकरों के अभिषेक: 2625 श्रद्धालुओं ने एक साथ 2625 चंवर ढुलाकर की श्री जी की भक्ति - बना विश्व कीर्तिमान: राजस्थान जैन सभा के 70 वर्ष के इतिहास में पहली बार 41 मुनि, आर्यिकाओं के पावन सानिध्य हुआ ऐतिहासिक कायक्रम

कार्यक्रम में दोनों आचार्य गुरु आस्था परिवार को वर्ल्ड रिकॉर्ड का खिताब भेंट करते हुए तथा भगवान महावीर जंयती स्मारिका के 61 वें अंक का विमोचन करते हुए

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 30 मार्च। पूरी दुनिया को 'जीओ और जीने दो' का दिव्य संदेश देने वाले, अहिंसा धर्म के प्रणेता, विश्ववंदनीय भगवान महावीर स्वामी का 2625 वां जन्म कल्याणक महोत्सव (जयन्ती समारोह) सोमवार को गुलाबी नगरी जयपुर में धूमधाम से मनाया गया, इस दौरान सुबह से ही शहर का चप्पा-चप्पा भगवान महावीर के जयकारों से गूंजता रहा। मुख्य आयोजन राजस्थान जैन सभा, जयपुर के तत्वावधान में वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ एवं व्याख्यान वाचस्पति आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में न्यूगेट के रामलीला मैदान पर हुआ, इस मौके पर ध्वजारोहण, दीप प्रज्ज्वलन, स्मारिका विमोचन, पहली बार 24 तीर्थंकरों के 24 पाण्डुक शिलाओं पर एक साथ कलशाभिषेक तथा 2625 चंवर एक साथ ढुलाने सहित धर्म सभा का भव्यता से आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में शोभायात्रा के मार्ग में राज नेताओं, जगह -जगह व्यापारिक, सामाजिक, संस्थाओं सहित प्रबुद्धजनों ने पुष्प वर्षा व आरती उतार कर स्वागत व सत्कार किया।

कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा के यशस्वी उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि उक्त शोभायात्रा में पहली बार 24 तीर्थंकरों के 24 स्वर्णिम आभा युक्त रथ शामिल हुए जिन पर सौधर्म इन्द्र, सारथी, कुबेर सहित अन्य इन्द्र बैठे 23 रथों के बाद आखिर में 24 वें रथ में भगवान महावीर की प्रतिमा स्वर्ण जड़ित रथ पर विराजमान थी, जिसमें समाज के भामाशाह धर्म श्रेष्ठी परिवार के रमेश कुमार ठोलिया श्री जी के चंवर ढुलाते चल रहे थे।

कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा के कमेटी सदस्य व मुल्तान जैन समाज की भजन मण्डली आखिरी रथ के आगे भक्ति करते हुए चल रही थी। कार्यक्रम में जौहरी बाजार में आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ एवं आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ससंघ का भव्य मिलन हुआ जो देखने काबिल दृश्य था। दोनों संघों की 41 पिच्छिका शोभा यात्रा में शामिल हुई। महावीर पार्क से शुरू हुई यह शोभायात्रा विभिन्न मार्गो से होती हुई रामलीला मैदान पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। शोभा यात्रा में घोड़े पर जैन ध्वज लेकर विजय सोगानी बैठे हुए थे, कार्यक्रम में जौहरी बाजार में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् हेरिटेज संभाग जयपुर का विशेष आकर्षण रहा जिसमें कार्यक्रम के मुख्य संयोजक विनोद पापड़ीवाल ने बताया कि युवा परिषद् हेरिटेज के स्टेज पर संजय-अंजना शाह ने चित्र अनावरण, रमेश जैन-माया तिजारिया परिवार ने दीप प्रज्ज्वलित किया। कार्यक्रम में राजेश-वर्षा बाकलीवाल, केलास चंद, माणक चंद, रमेश कुमार ठोलिया परिवार ने पुष्प वर्षा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। मंच पर प्रसिद्ध संगीतकार वॉइस आफ पिंक सिटी नरेंद्र कुमार जैन ने विशेष प्रस्तुति देकर सभी श्रृद्धालुओं को भक्ति में रंग नृत्य करने का अवसर प्राप्त किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष रुपेन्द्र जैन ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया, राष्ट्रीय महामंत्री उदय भान जैन, प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन, प्रदेश उपाध्यक्ष संजय काला, प्रदेश महामंत्री विमल बज, प्रमुख समाजसेवी दीक्षांत हाडा, डा. राजीव जैन, सामूहिक जिनेन्द्र आराधना के अध्यक्ष राकेश गोधा तथा जैन गजट के राजाबाबू गोधा सहित सभी पदाधिकारी गण मौजूद थे, जिसमें संभाग के दिनेश जैन, नरेश छाबड़ा, सुनिता गंगवाल, अक्षय बिलाला, राजेश सेठी तथा संजय छाबड़ा ने सभी आगंतुकों का दुपट्टा पहनाकर अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में शोभायात्रा में बैण्ड बाजे, हाथी, घोड़े, ऊट, लवाजमा के साथ महिला मंडल की सदस्याएं, विभिन्न स्कूलों के छात्र - छात्राएं, भजन मण्डलियां, बडी संख्या में श्रद्धालुगण नाचते गाते भक्ति में झूमते हुए शामिल हुए। शोभायात्रा का यह आलम था कि पहला छोर न्यू गेट था तब अंतिम छोर त्रिपोलिया बाजार में था।

इस मौके पर आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ने महावीर जयन्ती के प्रसंग पर बोलते हुए कहा कि भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव विश्व में अमन, चैन व शांति की स्थापना के लिए मनाया जा रहा है, आज पूरा विश्व विनाश के कगार पर है। इसे भगवान महावीर के पावन संदेश जीओ और जीने दो तथा अहिंसा से ही बचाया जा सकता है, उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति एक व्यक्ति को शाकाहारी बना दे तथा इस तरह देश में शाकाहारी बनाने की चैन बन जाए तो दस वर्ष में पूरा देश शाकाहारी बन सकता है तथा लाखों जीवों की हत्या बच सकती है। आज सामाजिक एकता की जरुरत है। समाज की राजनीति धर्म नीति के साथ तथा देश की राजनीति, राजनीति के साथ करनी चाहिए। कार्यक्रम में आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने अपनी मंगलमयी वाणी से श्रृद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव इसलिए मनाते हैं कि उन्होंने आज से 2624 वर्ष पूर्व अंतिम बार जन्म लिया था तथा उन्हें निर्वाण की प्राप्ति हो गई। इसलिए जन्म कल्याणक मनाते हैं ना कि जन्म जयंती। संयोग से जिस दिन भगवान महावीर का जन्म हुआ उस दिन भी सोमवार था और 2625 वर्ष बाद आज भी सोमवार है। उन्होंने पूरे विश्व को शांति, अहिंसा, शाकाहार का पाठ पढाया है। उन्होंने कहा आज का यह पावन दिवस हम सभी को भगवान महावीर जैसा बनने की प्रेरणा देता है। यह दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब उनके बताए सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाएं। भगवान महावीर केवल जैनियों के नहीं वे तो जन-जन के महावीर हैं। उनके सिद्धांत सार्वभौमिक है, वे किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है अपितु विश्व के प्राणी मात्र के लिए है, अहिंसा के माध्यम से ही विश्व में हम शांति की स्थापना कर सकते हैं, अपने जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाने से ही इस विश्व का कल्याण होगा।

कार्यक्रम में इससे पूर्व णमोकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के बाद धर्मसभा के प्रारंभ में जयकारों के साथ समाज श्रेष्ठी प्रसिद्ध समाजसेवी पुष्पलता, विवेक-आशा, आलोक, संजय काला परिवार ने ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया, कार्यक्रम में महावीर पब्लिक स्कूल की छात्राओं ने बैण्ड वादन किया, भगवान महावीर के चित्र के समक्ष समाज श्रेष्ठी श्रीपाल, सुरेश-ललिता सबलावत रेडीप्रिंट परिवार ने दीप प्रज्ज्वलित किया। कार्यक्रम में मंगलाचरण संत सुधासागर महिला छात्रावास की बालिकाओं ने किया, इस मौके पर राजस्थान जैन सभा के यशस्वी अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, मंत्री यशकमल अजमेरा, संयुक्त मंत्री आर के जैन, कोषाध्यक्ष अमर चन्द दीवान सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने आगंतुक अतिथियों का तिलक लगाकर व माला पहनाकर स्वागत व सम्मान किया।

कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद्र जैन एवं कोषाध्यक्ष अमर दीवान ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न मंत्रोच्चारों के द्वारा 24 तीर्थंकरों के 24 पाण्डुक शिलाओं पर एक साथ अभिषेक किये गये, तथा विश्व में सुख, समृद्धि और खुशहाली के लिए शांतिधारा की गई।

इस दौरान 2625 श्रद्धालुओं ने एक साथ 2625 चंवर ढुलाकर भक्ति करते हुए विश्व कीर्तिमान बनाया। कार्यक्रम में वर्ल्ड रिकार्ड बुक आफ इंडिया ने अधिकतम लोगों ने एक स्थान पर चंवर लेकर भक्ति नृत्य करने के लिए वर्ल्ड रिकार्ड का खिताब दिया। राजस्थान जैन सभा ने राष्ट्रीय गुरु आस्था परिवार को वर्ल्ड रिकार्ड का खिताब भेंट किया। इस मौके पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के यशस्वी अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल की अगुवाई में श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र कमेटी ने सदस्यों ने आचार्य वर्धमान सागर महाराज को जिनवाणी भेंट कर धर्म लाभ प्राप्त किया तथा नन्द किशोर, प्रमोद, सुनील पहाड़िया परिवार को पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन ने स्वागत भाषण व संस्था की गतिविधियों एवं जयपुर से बाहर सभा की शाखाओं का गठन करने तथा मानव सेवार्थ मार्च माह में 56 स्थानों पर रक्त दान शिविरों का आयोजन कर 2160 यूनिट रक्त एकत्रित होने की जानकारी दी तथा समाज बन्धुओं के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, अल्पसंख्यक योजनाओं के लाभ, छात्रवृत्ति योजना, वैवाहिक सेवा केन्द्र की स्थापना, बेरोजगारों को रोजगार मुहैया कराने की योजना, छात्रावास के लिए भूमि आवंटन करवाने के प्रयासों सहित समाज हित की गतिविधियों की जानकारी दी। इस मौके पर 24 परिवारों द्वारा अष्ट द्रव्यों से भगवान महावीर की संगीतमय पूजा की एवं आचार्यों के अर्घ्य समर्पित किये, कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक नरेन्द्र जैन ने भक्ति संगीत की प्रस्तुति दी। जुलूस के मुख्य संयोजक अनिल छाबड़ा ने झांकियों तथा शोभा यात्रा के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया, इस मौके पर महावीर जयंती स्मारिका के 61 वें अंक का विमोचन सभी आगंतुक अतिथियों ने किया, प्रबंध सम्पादक यशकमल अजमेरा व सम्पादक मण्डल ने सहभागिता निभाई।

स्मारिका के प्रबंध सम्पादक यशकमल अजमेरा ने अपने उदबोधन में सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन महामंत्री मनीष बैद ने किया।

उपाध्यक्ष विनोद जैन 'कोटखावदा' ने आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न जैन सोश्यल ग्रुपों व अन्य संस्थाओं की ओर से शीतल पेयजल, फलों की स्टॉले लगाई गई, धर्म सभा में राजनेताओं के साथ कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम के समापन बाद सभी आगंतुकों श्रृद्धालुओं ने आचार्य संघ से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त कर धर्म लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध समाजसेवी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रत्न व्यवसायी विवेक काला, प्रसिद्ध समाजसेवी उद्योग पति अनिल कुमार बनेठा, तीर्थ संरक्षणी महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष धर्म चंद पहाड़िया, पत्रकार महासंघ राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया, महामंत्री उदय भान जैन, कोषाध्यक्ष दिलीप जैन, बाड़ा पदमपुरा के संरक्षक ज्ञानचंद झांझरी, सुरेश सबलावत, अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल, प्रसिद्ध समाजसेवी प्रमोद पहाड़िया, कमल बाबू जैन, अनिल छाबड़ा, सुभाष बज, यशकमल अजमेरा, राजास्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष जैन, विनोद जैन कोटखावदा, अमर दीवान, चैतन जैन निमोडिया, मनीष वैद, राजीव पाटनी, रेलवे के आर. के. जैन, एडवोकेट राजेश काला, भारत भूषण अजमेरा, प्रकाश बाकलीवाल दुर्गापुरा, प्रकाश चांदवाड दुर्गापुरा, रमेश ठोलिया, निखार डिजाइनर के नरेंद्र पाटनी, श्रेष्ठ सिद्धा परिवार के अध्यक्ष सौरभ गौधा, संस्थापक अध्यक्ष धीरज पाटनी, पूर्व अध्यक्ष निर्मल पांड्या, वीर सेवक मंडल के भानु धाबडा, अरूण कोडीवाल, धर्म वीर लुहाड़िया, विनोद कुमार पापड़ीवाल तथा राजस्थान जैन सभा शाखा फागी के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, महामंत्री राजाबाबू गोधा सहित समाज के सभी पदाधिकारी गण मौजूद थे।

जयपुर के प्राचीन जैन मंदिर तीर्थ से कम नहीं, इस धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ का भट्टारक जी की नसिया में हुआ भव्य मंगल प्रवेश, महावीर स्कूल का किया अवलोकन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 5 अप्रैल। प्रसिद्ध दिगम्बर जैन आचार्य वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ का रविवार, 5 अप्रैल को भट्टारक जी की नसिया में विशाल जुलूस के साथ जयकारों के बीच भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए, इससे पूर्व आचार्यश्री ससंघ चार दीवारी स्थित चौकड़ी मोदीखाना के लश्कर पाटोदी दिगम्बर जैन मंदिर से मंगल विहार कर विभिन्न मंदिरों के दर्शन करते हुए सी-स्कीम स्थित महावीर स्कूल में पहुचे जहां विद्यालय परिसर के अवलोकन पश्चात् आचार्य श्री के आशीर्वचन हुए, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के मानद् मंत्री उमरावमल संघी एवं मुनि भक्त सुरेश सबलावत ने बताया कि आचार्य श्री ससंघ रविवार को प्रातः 6.30 बजे चौकड़ी मोदीखाना स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर पाटोदी से मंगल विहार कर किशनपोल बाजार, अजमेरी गेट होते हुए के टावर पहुचे जहां पुष्पलता विवेक काला परिवार द्वारा भव्य अगवानी की गई।

श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद् जयपुर के मानद् मंत्री सुनील बख्शी ने बताया कि आचार्य श्री ससंघ का विद्यालय परिसर में पहली बार मंगल आगमन हुआ। विद्यालय परिसर के अवलोकन के दौरान स्कूल में चल रही गतिविधियों की आचार्य संघ को जानकारी दी गई। वर्धमान सभागार में आयोजित धर्म सभा में पाद पक्षालन, मंगलाचरण के बाद आचार्य श्री के आशीर्वचन हुए।

राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक प्रातः 8.30 बजे बैण्ड बाजों के साथ विशाल जुलूस के साथ आचार्य श्री ससंघ का हास्पिटल रोड होकर दीवान जी की नसिया के दर्शन लाभ प्राप्त करते हुए भट्टारक जी की नसिया में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। मार्ग में सेठियों के चैत्यालय के दर्शन लाभ के बाद मार्ग में मुनि भक्त सुभाष चन्द जौहरी के आवास पर जौहरी परिवार द्वारा तथा धर्म जागृति संस्थान राजस्थान के पदाधिकारियों द्वारा अध्यक्ष पदम चन्द बिलाला के नेतृत्व में तथा उदय लाल दीवान जी की नसिया में दीवान परिवार द्वारा अनिल दीवान के नेतृत्व में आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती की गई, दीवान जी की नसिया में दर्शन लाभ प्राप्त करने के उपरांत आचार्य श्री की मंगल प्रवेश शोभायात्रा भट्टारक जी की नसिया पहुंची, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं राजस्थान जैन सभा जयपुर के महामंत्री मनीष बैद ने बताया कि भट्टारक जी की नसिया में मुख्य द्वार पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी कमेटी द्वारा आचार्य संघ की भव्य अगवानी की गई। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष एन के सेठी, जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन, उपाध्यक्ष सी पी पहाड़िया, मानद् मंत्री उमरावमल संघी, संयुक्त मंत्री अनिल दीवान, रुपिन काला, कोषाध्यक्ष हेमन्त सोगानी, अशोक पाटनी, विवेक काला, प्रदीप कुमार जैन, सुरेश सबलावत सहित श्रीमहावीर जी क्षेत्र कमेटी द्वारा पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती की गई।

कार्यक्रम में भरी धर्म सभा में अपने मंगलमय उद्‌बोधन में आचार्य श्री ने कहा कि संघ ने लगभग 26 वर्ष पूर्व इस नसिया में वर्षायोग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय यह नसियां शहर से बाहर थी अब बाहर बसावट के कारण शहर के मध्य में आ गई है। उन्होंने बताया कि सन् 1969 में जैनश्वरी दीक्षा के बाद पहली बार जयपुर आना हुआ। दूसरी बार 1999 में जयपुर में चातुर्मास किया और अब तीसरी बार पूरे संघ के साथ (35 पिच्छीका) पुनः आना हुआ। चार दीवारी में प्राचीन मंदिरों के दर्शन लाभ का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि जयपुर के प्राचीन मंदिर किसी तीर्थ से कम नहीं हैं। जैन संस्कृति की प्राचीन झलक इन प्राचीन मंदिरों में देखने को मिलती है। आज की पीढ़ी को इस प्राचीन धरोहर एवं संस्कृति को संरक्षण के साथ-साथ इसका विडियो बनाकर पूरे देश में प्रचार-प्रसार कर सभी को जानकारी देनी चाहिए जिससे देशवासी इन प्राचीन धरोहरों व मंदिरों के दर्शन लाभ व यात्रा करने जयपुर आये। जयपुर में दो बातें विशेष हैं - पहली यहां पढ़े लिखे लोग रहते हैं। दूसरी उद्योग पति व धनाढ्य लोग भी यहां निवास करते हैं। उसके उपरांत भी संस्कृति का संरक्षण गौण हो गया है। सारी संस्थाएं, संगठन जैन संस्कृति के प्रति संगठित होकर जैन धर्म का प्रचार प्रसार करें। उन्होंने कहा कि जब धर्म की प्रभावना करेंगे तो अपनी स्वयं की प्रभावना तो अपने आप हो जाएगी। उन्होंने नेतृत्व करने वालों को कहा कि अपनी प्रभावना के बजाय धर्म की प्रभावना को आगे बढ़ाने का काम करें। पूर्वजों द्वारा स्थापित इस संस्कृति को युवा पीढ़ी स्वयं भी देखे तथा पूरे देश को भी दिखाए। साथ ही जैन संस्कृति के इन गुणों को अपने जीवन में उतारे। उन्होंने महावीर जी क्षेत्र कमेटी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि भट्टारक जी की नसिया में विराजमान जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ से चांदनपुर महावीर जी में विराजमान जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक सारा प्रबंध देखने वाली कमेटी सबको साथ लेकर धर्म प्रभावना बढ़ाने का कार्य पूरे देश में करे। जिनवाणी स्तुति से धर्म सभा का समापन हुआ। इससे पूर्व शुरु में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के मानद् मंत्री उमर संघी ने स्वागत उद्‌बोधन दिया।

धर्म सभा के अंत में विनोद जैन कोटखावदा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मंच संचालन मनीष बैद ने किया, इस मौके पर राज कुमार कोठ्यारी, प्रदीप जैन लाला, कमल बाबू जैन, राजीव जैन गाजियाबाद, महेश काला, प्रमोद पहाडियाँ, विनोद जैन कोटखावदा, मनीष बैद, सुनील बख्शी, राजेन्द्र बिलाला, नवीन सांघी, पदम चन्द बिलाला, आर के जैन रेलवे, अशोक जैन नेता, राकेश गोधा, सुभाष बज, अनिल छाबड़ा, इंदिरा बड़जात्या, पूनम चांदवाड, नीतू मुल्तान, सुनिता अजमेरा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजनों ने सहभागिता निभाई।

प्रसिद्ध समाजसेविका श्रीमती चंदा जी सेठी दुर्गापुरा निवासी को 12 अप्रैल 2026 पर जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती चंदा जी सेठी
संरक्षक महिला मंडल दुर्गापुरा एवं संस्थापक
अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन त्रिशला संभाग, दुर्गापुरा

-: शुभेच्छु :-
राजकुमार जैन (पति)
आशीष-सोनाली, अभिषेक-रचना, अरिहंत-रिजु (पुत्र-पुत्र वधू), परिधि, सुहानी, मनस्वी, आरव, अविशि, तत्व (पौत्र-पोत्रियां) सहित
समस्त सेठी परिवार, दुर्गापुरा

91, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 (राजस्थान)
मो. 93515-33650

सोनागिर जैन मंदिर में सनसनीखेज चोरी

ऊंची पहाड़ी पर स्थित मंदिर से साढ़े 10 किलो चांदी की प्रतिमा चोरी

पुनीत जैन

मध्यप्रदेश के दतिया जिले के सोनागिर से एक बड़ी चोरी की वारदात सामने आई है, जहां भगवान चंद्रप्रभु के मुख्य जैन मंदिर को चोरों ने निशाना बनाया। अज्ञात बदमाश मंदिर से करीब साढ़े 10 किलो वजनी चांदी की प्रतिमा चुराकर ले गए और साथ ही दान पेटी तोड़कर उसमें रखी नगदी भी साफ कर दी। इस घटना के बाद पूरे तीर्थ क्षेत्र में हड़कंप मच गया है।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि यह मंदिर पहाड़ी की ऊंची चोटी पर स्थित है, जहां पहुंचना आसान नहीं है। इसके बावजूद चोरों ने बड़ी ही प्लानिंग के साथ वारदात को अंजाम दिया। हैरानी की बात यह भी है कि मंदिर के ठीक सामने पुलिस चौकी मौजूद है, लेकिन इसके बावजूद चोरी हो जाना सुरक्षा व्यवस्था पर बड़े सवाल खड़े करता है। जानकारी के मुताबिक, चोरी हुई चांदी की प्रतिमा हाल ही में होली मेले के दौरान मंदिर में स्थापित की गई थी। चोरों ने न सिर्फ प्रतिमा चुराई, बल्कि दान पेटी को भी निशाना बनाया और उसमें रखी पूरी रकम लेकर फरार हो गए। सुबह जब पुजारी और श्रद्धालु मंदिर पहुंचे, तब इस घटना का पता चला और तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। मंदिर में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए थे, लेकिन घटना के समय वे बंद थे, जिससे जांच में दिक्कत आ रही है। शुरुआती जांच में पुलिस को कोई पुख्ता सुराग नहीं मिला है, लेकिन शक जताया जा रहा है कि इस वारदात में किसी अंदरूनी व्यक्ति का हाथ हो सकता है, जिसे मंदिर की पूरी व्यवस्था की जानकारी थी। फिलहाल पुलिस संदिग्ध लोगों से पूछताछ कर रही है और आसपास के इलाकों में जांच तेज कर दी गई है। यह पहली बार नहीं है, इससे पहले साल 2023 में भी यहां दान पेटी चोरी की घटना हो चुकी है, जिससे मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। घटना को लेकर तीर्थक्षेत्र के मंत्री बालचंद्र जैन ने नाराजगी जताई है और पुलिस की लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। वहीं, बड़ोनी एसडीओपी विनायक शुक्ला ने कहा है कि पुलिस हर एंगल से जांच कर रही है और जल्द ही आरोपियों को पकड़ लिया जाएगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि इस मामले का जल्द खुलासा किया जाएगा।

सेवा धर्म समाज की आगम के अनकूल। यह पुनीत उद्देश्य है जैन गजट का मूल।।
जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

विश्व नमोकार महामंत्र दिवस: जब एक मंत्र, विश्व की धड़कन बन गया

संपादकीय

इतिहास हमेशा शोर से नहीं बनता, कभी-कभी वह मौन में लिखा जाता है, 9 अप्रैल 2026 को ऐसा ही एक मौन, लेकिन विराट इतिहास रचा गया, जब 108 देशों में करोड़ों कंठों से एक साथ णमोकार मंत्र गूंजा। यह केवल उच्चारण नहीं था, यह आत्मा की सामूहिक जागृति थी। यह वह क्षण था, जब जैन समाज ने दुनिया को बिना कुछ कहे बहुत कुछ कह दिया।

णमोकार मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह किसी नाम, रूप या संप्रदाय में सीमित नहीं है। यह गुणों को प्रणाम करता है-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। यह क्रम केवल वंदना नहीं, बल्कि आत्मा के उत्कर्ष की यात्रा है। पाँच पदों और 35 अक्षरों में समाहित यह मंत्र हमें सिखाता है कि ऊँचा उठने का पहला कदम है-झुकना। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों परंपराओं में इसकी समान श्रद्धा इस सत्य को स्थापित करती है कि जैन धर्म की आत्मा एक है, अविभाज्य है और शाश्वत है।

इस वर्ष का विश्व णमोकार दिवस केवल एक आयोजन नहीं था, यह अनुशासन का उत्सव था। एक समय, एक परिधान, एक स्वर-यह दृश्य स्वयं में संदेश था कि जब समाज भीतर से एक हो जाता है, तो बाहरी विभाजन स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

Jain International Trade Organization जीतो की टीम ने जिस समर्पण से इस आयोजन को वैश्विक स्वरूप दिया, वह यह दर्शाता है कि संकल्प जब सामूहिक बन जाए, तो असंभव भी संभव हो जाता है।

यह भी एक गहरा संकेत है कि इस देश का नाम 'भारत' प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से जुड़ा है। यह केवल एक ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि उस चेतना का स्मरण है, जिसमें संयम है, त्याग है और अहिंसा जीवन का आधार है।

आज विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता शांति है और शांति का सबसे सशक्त मार्ग है अहिंसा। महात्मा गांधी ने इसी अहिंसा को अपना अस्त्र बनाकर यह सिद्ध किया कि सत्य और संयम के बल पर भी इतिहास की दिशा बदली जा सकती है।

पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1981 में लोकसभा में जैन धर्म के प्रभाव को स्वीकार करते हुए यह भाव व्यक्त किया था कि जैन सिद्धांत केवल एक समाज तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे भारत के जीवन में गहराई से समाहित हैं, इस अर्थ में सारा भारत ही जैन है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने वक्तव्यों में बार-बार कहा है कि जैन धर्म के अहिंसा और अनेकांत के सिद्धांत आज के विश्व के लिए मार्गदर्शक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ''जब दुनिया संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रही है, तब जैन दर्शन का संदेश-अहिंसा, अपरिग्रह और सह-अस्तित्व मानवता को दिशा दे सकता है।'' हाल के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब अनेक क्षेत्रों में युद्ध और तनाव के बाद शांति की पहलें दिखाई दे रही हैं, तब यह संदेश और भी प्रासंगिक हो उठता है कि स्थायी समाधान केवल अहिंसा और संवाद से ही संभव है।

गृह मंत्री अमित शाह ने 9 अप्रैल के अवसर पर अपने उद्बोधन में जैन समाज की अनुशासनशीलता, राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका और उसके मूल्यों को अनुकरणीय बताते हुए णमोकार मंत्र की जो अद्भुत विशेषताएं बताई वे हमारे लिए गौरव का अवसर बनी। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भी अनेक अवसरों पर जैन समाज के त्याग, संयम और नैतिकता को देश के लिए प्रेरणास्रोत माना है।

जैन एकता की सच्ची पहचान तब प्रकट होती है, जब हम नाम और भेद से ऊपर उठते हैं। भजन सम्राट रवींद्र जैन ने 1981 में गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक के दौरान इन पंक्तियों के माध्यम से यही संदेश दिया था-

''हम नहीं दिगंबर, श्वेतांबर, तेरह पंथी, स्थानकवासी,सब एक धर्म के अनुयाई, सब एक देव के विश्वासी।
नित णमोकार का जाप करें, और पाठ करें भक्तामर का, हम जैनी-अपना धर्म जैन, इतना ही परिचय केवल हो।''

ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी उस समय थीं क्योंकि णमोकार केवल मंत्र नहीं, बल्कि एकता की चेतना है।

विश्व णमोकार दिवस हमें एक प्रश्न देकर जाता है-क्या हम केवल मंत्र के उच्चारक हैं, या उसके साधक भी? क्योंकि मंत्र जपने से प्रभाव बनता है, पर मंत्र जपने ने से परिवर्तन होता है और जिस दिन यह परिवर्तन भीतर उतर गया, उस दिन शायद दुनिया को शांति सिखाने के लिए किसी और उदाहरण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

अनुपम आयोजन में सम्मिलित समाज जनों को बधाई और जैन एकता के सर्वोच्च मंत्र णमोकार को हृदय में समाहित करते हुए पंच परमेष्ठि भगवंतों के चरणों में नमन!!

राजेन्द्र जैन महावीर
सह संपादक जैन गजट

बदलते समय में बिखरते पारिवारिक मूल्य-एक मूक संकट

वर्तमान युग की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि जितना मनुष्य बाहरी दुनिया से जुड़ रहा है, उतना ही वह अपने ही घर-आँगन से दूर होता जा रहा है। संबंधों की ऊष्मा, संवाद की सहजता और संस्कारों की गहराई-ये सब मानो समय की तेज आँधी में धुँधले पड़ते जा रहे हैं। परिवार, जो कभी मनुष्य के व्यक्तित्व का पहला और सबसे सशक्त आधार था, आज कई स्थानों पर केवल एक औपचारिक व्यवस्था बनकर रह गया है।

नई पीढ़ी, जिसे हम आधुनिक, आत्मनिर्भर और जागरूक कहते हैं, अपने भीतर अपार संभावनाएँ समेटे हुए है। उसमें अपने निर्णय स्वयं लेने का साहस है, अपनी राह स्वयं गढ़ने का आत्मविश्वास है किन्तु इसी आत्मविश्वास के साथ एक सूक्ष्म अहं भी पनपता दिखाई देता है-एक ऐसा भाव, जो अनुभव से अधिक तात्कालिक ज्ञान को महत्व देता है। परिणाम स्वरूप, माता-पिता का स्थान मार्गदर्शक से बदलकर मात्र 'सुविधा प्रदाता' तक सीमित होता जा रहा है। कभी परिवार केवल साथ रहने का स्थान नहीं था, वह जीवन का गुरुकुल था। वहाँ माता-पिता अपने अनुभवों की रोशनी से बच्चों के मार्ग को आलोकित करते थे। उनकी डाँट में भी स्नेह होता था और उनके मौन में भी गहरी सीख छिपी होती थी। उस समय 'संस्कार' कोई उपदेश नहीं, बल्कि जीवन की सहज धारा थे, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होती थीं, परन्तु आज, जब जीवन की गति असाधारण रूप से तेज हो गई है, तब संबंधों की गहराई कहीं पीछे छूटती जा रही है। डिजिटल दुनिया ने हमें सूचना तो दी है, परंतु संवेदना छीन ली है। परिवार के सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अपने-अपने एकांत में कैद हैं। संवाद का स्थान स्क्रीन ने ले लिया है और अनुभव का स्थान तात्कालिक प्रतिक्रियाओं ने। युवा पीढ़ी अपने निर्णय स्वयं लेना चाहती है-यह उसका अधिकार भी है। किन्तु जब यह स्वतंत्रता मार्गदर्शन से कट जाती है, तब वह दिशा खोने लगती है। अनुभव की कमी को अक्सर आत्मविश्वास ढक लेता है, और तब जीवन की छोटी-सी ठोकर भी बड़ी पीड़ा बन जाती है। यही वह क्षण होता है, जब व्यक्ति को अहसास होता है कि माता-पिता केवल सलाह देने वाले नहीं, बल्कि जीवन के सबसे सच्चे संरक्षक होते हैं।

दूसरी ओर, माता-पिता को भी यह स्वीकार करना होगा कि समय बदल चुका है। पुरानी मान्यताओं को ज्यों का त्यों थोपना अब संभव नहीं। उन्हें अपने अनुभवों को आदेश के रूप में नहीं, बल्कि संवाद के रूप में प्रस्तुत करना होगा। जब संबंधों में संवाद जीवित रहता है, तभी विश्वास और अपनापन बना रहता है। वास्तव में, समस्या न तो केवल युवा पीढ़ी में है और न ही केवल पुरानी पीढ़ी में। यह उस संतुलन के टूटने की समस्या है, जो कभी दोनों के बीच सहज रूप से विद्यमान था। जब परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक बनती हैं, तभी एक स्वस्थ और सशक्त समाज का निर्माण होता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार को पुनः 'संस्कारों के केंद्र' के रूप में स्थापित करें। बच्चों को केवल सुविधाएँ ही नहीं, बल्कि समय, संवाद और स्नेह भी दें और युवा पीढ़ी भी यह समझे कि अनुभव का कोई विकल्प नहीं होता-वह केवल सुना नहीं, जिया जाता है।

अंततः, परिवार एक वृक्ष की भाँति है-जिसकी जड़ें संस्कार हैं, तना विश्वास है और शाखाएँ संबंध। यदि जड़ें कमजोर हों, तो वृक्ष कितना भी ऊँचा क्यों न हो, वह टिक नहीं सकता। इसलिए आवश्यक है कि हम आधुनिकता की उड़ान भरते हुए भी अपनी जड़ों को न भूलें, क्योंकि वहीं हमें स्थिरता और पहचान प्रदान करती हैं।,

- डॉ. सुनील जैन 'संचय; सह सम्पादक -जैन गजट

युवा पीढ़ी में कुंवारापन समाज में चिंतनीय विषय

विजय कुमार जैन, राघौगढ़

पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में भारत में युवा पीढ़ी ने अनेक कुरीतियों को उत्साह से अपनाया है। इन कुरीतियों में एक कुरीति कुंवारापन भी है। प्रेम विवाह, लिवइन रिलेशनशिप, सह शिक्षा, क्लबों में ऑल नाइट पार्टी आदि के साथ-साथ युवा पीढ़ी ने अब कुंवारेपन में भी जीवन को मुस्कान भरा बना लिया है। सरकार द्वारा विवाह के लिए लड़की की उम्र 18 वर्ष एवं लड़के की उम्र 21 वर्ष निर्धारित की गई है। यह नियम सरकार ने इसलिये लागू किया कि पूर्व में राजस्थान आदि प्रांतों अक्षय तृतीया को सामूहिक विवाह सम्मेलनों में छोटी उम्र में ही विवाह कर दिए जाते थे। भारत सरकार कार द्वारा विवाह के लिये जो उम्र निर्धारित की है वह हर दृष्टि से उपयुक्त है। हम विचार करें तो विवाह के लिये यह कुंवारेपन का विस्फोट, समाज अंधी दौड़ में कहाँ पहुँच रहा है ? अब वक्त आ गया है कि चीजों को मीठे शब्दों में कहना बंद किया जाए। दुनिया जिस आजादी की जय-जयकार कर रही है, वही आजादी धीरे-धीरे परिवार, रिश्तों, और सामाजिक संतुलन, सब कुछ निगलने लगी है। पदम श्री डॉक्टर सुरेश आडवाणी देश के सुप्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ हैं, आप बोन मेरो ट्रांसप्लांट करने वाले आंकोलॉजिस्ट हैं। आप अभी तक एक लाख से अधिक कैंसर पीड़ितों का इलाज कर चुके हैं डॉक्टर सुरेश आडवाणी ने गत दिनों रायपुर में कहा है देर से शादी से ब्रेस्ट कैंसर 10 गुना बढ़ा है। युवक युवती की शादी 22-23 वर्ष में और 25 वर्ष में पहला बच्चा पैदा करना जरूरी है। इससे ब्रेस्ट कैंसर का खतरा कम होता है। एक ओर साधु संत एवं समाज के प्रबुद्ध जन यह जागरूकता अंक अभियान चला रहे हैं कि समाज की जनसंख्या बढ़ाने के लिए तीन संतान पैदा करें। दूसरी ओर युवक युवती कुंवारेपन में ही सुख मान रहे हैं। कुंवारेपन का एक पहलू यह भी है। माता पिता अपनी बेटी के लिये ऐसा रिश्ता देख रहे हैं जो मुंबई, पूना, हैदराबाद, बैंगलुरु या विदेश में नौकरी कर रहा हो। बेटी का रिश्ता संयुक्त परिवार, कस्बों या छोटे नगरों में नहीं कर रहे हैं। जो अविवाहित युवक व्यापार कर रहे हैं। उनको रिश्ते नहीं मिल रहे हैं। कस्बों एवं छोटे नगरों में समाज इस सोच से युवकों में न चाहकर भी कुंवारापन तेजी से बढ़ रहा है। अंतर्राष्ट्रीय सर्वे कहता है कि आने वाले कुछ वर्षों में युवतियों में 45: तक विवाह से दूरी बना सकती हैं! पहली नजर में यह प्रगति लगती है, पर असल में यह भविष्य के लिए एक टाइम-बम है। कैरियर, पैसे और अकेलापन यह कैसी प्रगति? आज के बेटे-बेटी डॉक्टर, इंजीनियर, सी ए, उद्यमी, सब बन रहे हैं। बहुत अच्छा, शानदार पर क्या कैरियर पूरा जीवन है? पैसा साथी नहीं बनता। पद वृद्धावस्था में हाथ नहीं पकड़ता। मोबाइल और लैपटॉप बुढ़ापे में बात नहीं करते। लेकिन समाज को इस सच्चाई से फर्क नहीं पड़ता, सबको दौड़ लगानी है, बस लगानी है।

परिवार ढह रहे हैं कोई देख भी रहा है? कुंवारे लड़के बढ़ रहे हैं, अविवाहित युवतियाँ बढ़ रही हैं, जनसंख्या गिर रही है और अकेलेपन उद्योग (counsellor,therapy, depression pills) फल-फूल रहा है। पर हम फिर भी कहते हैं, सब ठीक है, यह आधुनिकता है। यह आधुनिकता नहीं, धीमी मौत है, परिवार, समाज और मानवीय संबंधों की। सर्वाधिक खतरनाक स्थिति। आज माता-पिता रिश्ता ढूंढते हैं, पर लड़की कहती है, अभी नहीं। फिर अभी नहीं धीरे-धीरे कभी नहीं में बदल जाता है और जब एहसास होता है तो मेडिकल रिपोर्ट सामने होती है, हार्मोनल इश्यू, कंसिव न होना, मानसिक तनाव, अकेलापन। पर तब कौन जिम्मेदार? कोई नहीं, क्योंकि फैसला स्वतंत्रता का था। समाज के सफेदपोश लोग चुप क्यों हैं क्योंकि सच्चाई बोलने से उन्हें आधुनिकता-विरोधी कहलाने का डर है। पर सच्चाई यह है कि अगर 21-25 की उपयुक्त उम्र में विवाह नहीं हुए तो समाज जल्द ही दिसंबर की ठंडी रात जैसा सूना हो जाएगा। अंतिम बात प्रगति वो नहीं जो हमें अकेला कर दे। अगर हमारा भविष्य कुंवारा, अकेला और भावहीन होने वाला है, तो समाज के लिए यह गर्व की नहीं, खतरे की घंटी है।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

क्या किसी दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र पर किसी एक पंथ को मान्यता मिलनी चाहिए?: एक गंभीर चिंतन

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

धर्म का वास्तविक उद्देश्य क्या है? क्या वह लोगों को जोड़ने के लिए है या बाँटने के लिए? क्या तीर्थक्षेत्र आत्मा की उन्नति का माध्यम हैं या फिर सामाजिक प्रतिष्ठा और अधिकार का केंद्र? ये प्रश्न आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक हो गए हैं, विशेष रूप से तब जब दिगम्बर जैन समाज के भीतर ही बीस पंथी और तेरा पंथी जैसे विभाजन तीर्थों की पहचान तक को प्रभावित करने लगे हैं। यह विषय केवल एक प्रशासनिक या परंपरागत विवाद नहीं है, बल्कि यह धर्म की आत्मा, उसकी मर्यादा और उसकी भविष्य दिशा से जुड़ा हुआ है। यदि समय रहते इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया, तो यह विभाजन धीरे-धीरे हमारे धार्मिक मूल्यों को कमजोर कर सकता है।

1. तीर्थ का वास्तविक अर्थ और उसका महत्व: जैन धर्म में ''तीर्थ'' शब्द का अर्थ केवल एक भौतिक स्थान नहीं है। तीर्थ वह है जहाँ आत्मा संसार के बंधनों से मुक्त होने का मार्ग खोजती है। जहाँ तप, त्याग, साधना और वैराग्य की प्रेरणा मिलती है। जहाँ अनगिनत मुनियों ने अपने जीवन का बलिदान देकर आत्मा को ऊँचा उठाने का प्रयास किया।
ऐसे पवित्र स्थानों को यदि हम ''बीस पंथी तीर्थ'' या ''तेरा पंथी तीर्थ'' कहकर सीमित कर दें, तो यह केवल एक नामकरण नहीं होगा, बल्कि यह तीर्थ की आत्मा को संकुचित करने जैसा होगा।
तीर्थ किसी एक व्यक्ति, परिवार, संस्था या पंथ की निजी संपत्ति नहीं होते। वे समस्त जैन समाज की साझा धरोहर हैं। जिस प्रकार आकाश सबका है, उसी प्रकार तीर्थ भी सबके हैं।

2. बीस पंथी और तेरा पंथी - भिन्नता या विविधता?: दिगम्बर जैन समाज में बीस पंथी और तेरा पंथी परंपराएँ वर्षों से अस्तित्व में हैं और इनका निर्माण मुख्यतः पूजा पद्धति, आचार-विचार तथा कुछ परंपरागत मान्यताओं के आधार पर हुआ है। बीस पंथी परंपरा में जहाँ विस्तृत विधियाँ, अनुष्ठान और परंपरागत पूजन पद्धति का अधिक महत्व है, वहीं तेरा पंथी परंपरा सादगी, संयम और अपेक्षाकृत सरल नियमों के पालन पर बल देती है। बाहरी दृष्टि से देखने पर यह अंतर बड़ा प्रतीत हो सकता है, लेकिन वास्तव में यह केवल अभिव्यक्ति का अंतर है, मूल तत्व का नहीं। दोनों ही परंपराएँ आत्मा की शुद्धि, संयम और धर्म पालन की दिशा में अग्रसर करती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों का दर्शन एक ही है, दोनों का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है और दोनों ही भगवान महावीर के सिद्धांतों-अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह का पालन करते हैं। जब मूल आधार, लक्ष्य और आस्था समान हैं, तो केवल विधियों के अंतर को आधार बनाकर विभाजन करना उचित नहीं ठहराया जा सकता। वास्तव में यह विविधता जैन धर्म की व्यापकता और सहिष्णुता का प्रतीक है, जो यह दर्शाती है कि एक ही सत्य को अलग-अलग मार्गों से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि जब जड़ एक ही है, तो क्या शाखाओं के आधार पर तीर्थों का विभाजन उचित है? तीर्थ तो वह स्थान है जहाँ आत्मा को शांति और उन्नति मिलती है, न कि जहाँ भेदभाव और अलगाव की भावना जन्म ले। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम इन भिन्नताओं को विभाजन नहीं, बल्कि विविधता के रूप में स्वीकार करें और एकता के साथ धर्म के मूल उद्देश्य की ओर अग्रसर हों।

3. जब तीर्थ ''अपना-पराया'' बन जाता है: समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम तीर्थ जैसे पवित्र स्थलों को ''हमारा'' और ''उनका'' कहकर बाँटने लगते हैं। यह भावना धीरे-धीरे अहंकार, स्वामित्व और प्रतिस्पर्धा का रूप ले लेती है, जो धर्म के मूल उद्देश्य के बिल्कुल विपरीत है। आज कई स्थानों पर यह देखने को मिलता है कि किसी एक पंथ का तीर्थ पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास होता है, जिसके परिणाम स्वरूप दूसरे पंथ के लोगों को वहाँ सहजता और स्वतंत्रता के साथ पूजा करने में कठिनाई होती है।
प्रबंधन और निर्णयों में भी पक्षपात दिखाई देने लगता है, जिससे वातावरण में असंतुलन और असंतोष उत्पन्न होता है। यह स्थिति केवल बाहरी विवाद तक सीमित नहीं रहती, बल्कि श्रद्धालुओं की आस्था को भी गहराई से आहत करती है। एक साधारण श्रद्धालु जब तीर्थ पर जाता है, तो वह वहाँ शांति, भक्ति और आत्मिक संतोष की अपेक्षा करता है, लेकिन यदि उसे वहाँ भेदभाव, विवाद या तनाव का अनुभव हो, तो उसका मन विचलित हो जाता है और उसका विश्वास कमजोर पड़ने लगता है। तीर्थ का उद्देश्य आत्मा को शांति देना है, न कि मन में अशांति उत्पन्न करना। जब तीर्थ ''अपना-पराया'' के भाव में बँट जाता है, तो वह अपने मूल स्वरूप से भटक जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि तीर्थों को किसी एक पंथ की संपत्ति न मानकर, समस्त समाज की साझा आस्था का केंद्र माना जाए, जहाँ हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के श्रद्धा और भक्ति के साथ जुड़ सके।

4. धर्म और अहंकार - एक विरोधाभास: धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के भीतर से अहंकार को समाप्त करना और उसे विनम्र, सहिष्णु तथा आत्मिक रूप से उन्नत बनाना है। लेकिन जब हम तीर्थों को पंथों के आधार पर बाँटते हैं और ''यह तीर्थ हमारा है'' या ''यहाँ केवल हमारी परंपरा चलेगी'' जैसे विचारों को बढ़ावा देते हैं, तो हम अनजाने में अहंकार को ही पोषित कर रहे होते हैं। यह स्थिति अत्यंत विरोधाभासी है, क्योंकि जहाँ धर्म होना चाहिए वहाँ अहंकार प्रवेश कर जाता है। ये वाक्य भले ही सामान्य लगें, लेकिन इनके पीछे छिपी भावना स्वामित्व, वर्चस्व और दूसरों को कमतर समझने की होती है, जो धर्म के मूल सिद्धांतों के विपरीत है। जैन धर्म का एक प्रमुख सिद्धांत है- अनेकांतवाद, जो हमें यह सिखाता है कि सत्य के अनेक पहलू होते हैं और किसी एक दृष्टिकोण को ही पूर्ण सत्य मान लेना उचित नहीं है। यह सिद्धांत सहिष्णुता, सम्मान और समन्वय की भावना को बढ़ावा देता है। यदि हम इसे अपने व्यवहार में उतारें, तो पंथों के बीच का अंतर विवाद का कारण नहीं बनेगा, बल्कि एक-दूसरे को समझने और स्वीकार करने का माध्यम बनेगा। लेकिन यदि हम अनेकांतवाद को भूलकर अपने पंथ को ही सर्वोपरि मानने लगें, तो यह न केवल दूसरों के प्रति अन्याय होगा, बल्कि स्वयं धर्म के साथ भी अन्याय होगा। इसलिए आवश्यक है कि हम धर्म को अहंकार से मुक्त रखें और उसे एकता, विनम्रता और समभाव के साथ अपनाएँ, तभी सच्चे अर्थों में धर्म का पालन संभव हो सकेगा।

5. इतिहास से सीख: इतिहास केवल बीते समय की घटनाओं का संग्रह नहीं होता, बल्कि वह वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक भी होता है। जब हम धर्म और समाज के इतिहास को देखते हैं, तो एक बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि जहाँ भी एकता, समन्वय और सहयोग की भावना रही है, वहाँ धर्म ने न केवल अपनी जड़ें मजबूत की हैं, बल्कि वह निरंतर फला-फूला भी है। इसके विपरीत, जहाँ विभाजन, अहंकार और आपसी संघर्ष बढ़े हैं, वहाँ धर्म की शक्ति कमजोर हुई है और समाज बिखराव की ओर बढ़ा है। जैन समाज के संदर्भ में भी यह सत्य पूरी तरह लागू होता है। जिन तीर्थों पर सभी पंथों के लोग मिलकर, बिना किसी भेदभाव के, एक साथ पूजा-अर्चना करते हैं, वहाँ एक विशेष प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण होता है। ऐसे स्थानों पर श्रद्धा अधिक गहरी होती है, क्योंकि वहाँ व्यक्ति को अपनापन और सम्मान का अनुभव होता है। सहयोग की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित होती है, जिससे समाज के भीतर एकता और विश्वास मजबूत होता है, और इसका एक सकारात्मक संदेश पूरे समाज में प्रसारित होता है। इसके विपरीत, जहाँ तीर्थों को पंथों के आधार पर बाँट दिया जाता है, वहाँ समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। वहाँ विवाद, मतभेद और यहाँ तक कि कानूनी मुकदमें भी बढ़ने लगते हैं, जो न केवल समय और संसाधनों की बर्बादी करते हैं, बल्कि समाज की छवि को भी धूमिल करते हैं। जब बाहरी लोग ऐसे विवाद देखते हैं, तो उनके मन में धर्म के प्रति सम्मान कम होने लगता है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इन परिस्थितियों का प्रभाव नई पीढ़ी पर भी पड़ता है, जो इन संघर्षों को देखकर धर्म से दूर होने लगती है। इसलिए इतिहास हमें स्पष्ट संकेत देता है कि यदि हमें धर्म और समाज को मजबूत बनाना है, तो हमें विभाजन नहीं, बल्कि एकता का मार्ग अपनाना होगा।

6. नई पीढ़ी पर प्रभाव: आज की युवा पीढ़ी पहले की तुलना में कहीं अधिक जागरूक, शिक्षित और संवेदनशील है। वह किसी भी बात को आँख मूँदकर स्वीकार करने के बजाय उसे तर्क, अनुभव और समझ के आधार पर परखना चाहती है। धर्म के प्रति भी उसका दृष्टिकोण बदल चुका है-वह केवल परंपराओं का पालन नहीं करना चाहती, बल्कि यह जानना चाहती है कि उन परंपराओं के पीछे का वास्तविक अर्थ और उद्देश्य क्या है। ऐसे में जब वह देखती है कि एक ही धर्म के अनुयायी आपस में पंथों के आधार पर विभाजित हैं, तीर्थों पर अधिकार स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और पूजा-पद्धति जैसे विषयों को लेकर विवाद हो रहे हैं, तो उसके मन में स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठते हैं- ''क्या यही धर्म है?'' और ''क्या यही आध्यात्मिकता है?''
ये प्रश्न केवल जिज्ञासा नहीं, बल्कि एक गहरी असंतोष की भावना को दर्शाते हैं। जब युवा पीढ़ी को धर्म में शांति, एकता और आत्मिक उन्नति के बजाय विवाद, अहंकार और विभाजन दिखाई देता है, तो उसका विश्वास कमजोर होने लगता है।
धीरे-धीरे वह धर्म से दूरी बनाने लगती है और उसे केवल एक औपचारिक या पारंपरिक व्यवस्था के रूप में देखने लगती है। यह स्थिति अत्यंत गंभीर है, क्योंकि किसी भी समाज का भविष्य उसकी नई पीढ़ी पर निर्भर करता है। यदि वही पीढ़ी धर्म से विमुख हो जाएगी, तो आने वाले समय में धर्म की जड़ें स्वतः ही कमजोर हो जाएँगी।
इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम नई पीढ़ी के सामने धर्म का सही और वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करें - एक ऐसा स्वरूप जो एकता, सहिष्णुता, तर्क और आत्मिक शांति पर आधारित हो। हमें अपने आचरण से यह दिखाना होगा कि धर्म विभाजन नहीं, बल्कि समन्वय का मार्ग है। तभी हम इस पीढ़ी को धर्म के प्रति आकर्षित कर पाएँगे और उसे सही दिशा दे सकेंगे।

7.समाधान - एक समावेशी दृष्टिकोण:
तीर्थ को साझा आस्था का केंद्र मानना - सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण समाधान यह है कि हम अपने दृष्टिकोण को बदलें और यह स्वीकार करें कि तीर्थ किसी एक पंथ, समूह या संस्था की निजी संपत्ति नहीं हैं। वे समस्त दिगम्बर जैन समाज की साझा आस्था, श्रद्धा और आध्यात्मिक विरासत के प्रतीक हैं। तीर्थ वह स्थान है जहाँ व्यक्ति अपने भीतर शांति, आत्मिक उन्नति और धर्म का साक्षात्कार करता है, इसलिए वहाँ ''मेरा-तेरा'' का भाव स्थान नहीं रखता। जब हम तीर्थ को सामूहिक धरोहर मानेंगे, तभी उसमें समावेश, अपनापन और सच्ची भक्ति का वातावरण बन पाएगा।
सभी परंपराओं का सम्मान - बीस पंथी और तेरा पंथी दोनों ही परंपराएँ जैन धर्म की विविधता और गहराई को दर्शाती हैं। इसलिए आवश्यक है कि दोनों को समान सम्मान और स्वतंत्रता दी जाए, ताकि वे अपनी-अपनी परंपरा और विधि के अनुसार पूजा कर सकें। किसी एक पद्धति को श्रेष्ठ और दूसरी को कमतर मानना न केवल गलत है, बल्कि यह धर्म की सहिष्णुता के सिद्धांत के भी विरुद्ध है। जब हम एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करेंगे, तभी समाज में सौहार्द और एकता का वातावरण बनेगा।
संतुलित प्रबंधन व्यवस्था - तीर्थ के प्रबंधन में संतुलन और पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी एक पंथ का प्रभुत्व हो जाता है, तो स्वाभाविक रूप से पक्षपात और असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। इसलिए प्रबंधन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें सभी पंथों की समान भागीदारी हो, ताकि निर्णय निष्पक्ष और सर्वहितकारी हों। जब सभी को प्रतिनिधित्व मिलेगा, तो विश्वास बढ़ेगा और विवाद की संभावनाएँ स्वतः कम हो जाएँगी।
संवाद और समझ - किसी भी विवाद का स्थायी समाधान टकराव, आरोप या शक्ति प्रदर्शन से नहीं, बल्कि संवाद और समझ से निकलता है। हमें एक-दूसरे के साथ बैठकर, धैर्यपूर्वक विचार-विमर्श करना होगा और सभी की भावनाओं को समझते हुए समाधान खोजने होंगे। संवाद से ही गलतफहमियाँ दूर होती हैं और विश्वास का निर्माण होता है। जब हम सुनने और समझने की भावना अपनाते हैं, तभी वास्तविक समाधान संभव होता है।
एक गहरी बात - ''जहाँ 'मैं' और 'मेरा' समाप्त होता है, वहीं से धर्म शुरू होता है।'' यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि धर्म का सार है। यदि हम तीर्थों को भी ''मेरा-तेरा'' के भाव में बाँट देंगे, तो हम धर्म की मूल तत्वकृविनम्रता, समभाव और आत्मिक उन्नतिकृको खो देंगे। सच्चा धर्म वही है जो हमें अहंकार से मुक्त कर, एकता और आत्मचिंतन की ओर ले जाए।

8. निष्कर्ष - एक निर्णय जो भविष्य तय करेगा: आज दिगम्बर जैन समाज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ लिया गया निर्णय केवल वर्तमान को नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य को भी गहराई से प्रभावित करेगा। हमें यह स्पष्ट रूप से तय करना होगा कि क्या हम तीर्थों को पंथों के आधार पर बाँटकर धर्म को संकुचित और सीमित बना देंगे, या फिर उन्हें सभी की साझा आस्था का केंद्र मानकर धर्म को व्यापक, उदार और सशक्त बनाएँगे। किसी भी दिगम्बर जैन तीर्थ को केवल बीस पंथी या तेरा पंथी की मान्यता देना न तो धर्मसंगत है और न ही व्यावहारिक, क्योंकि तीर्थ का मूल उद्देश्य आत्मिक उन्नति है, न कि पंथ विशेष का प्रभुत्व स्थापित करना। सही मार्ग यही है कि हम तीर्थों को सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की धरोहर मानें, जहाँ हर श्रद्धालु को बिना भेदभाव के समान अधिकार, सम्मान और स्वतंत्रता मिले। जब हम इस समावेशी दृष्टिकोण को अपनाएँगे, तभी हम धर्म की वास्तविक भावना को जीवित रख पाएँगे और समाज में एकता को मजबूत कर सकेंगे।

अंतिम संदेश: धर्म का वास्तविक सौंदर्य उसकी एकता, सहिष्णुता और समभाव में निहित होता है, न कि विभाजन और अहंकार में। तीर्थ की महत्ता उसकी पवित्रता, शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा में होती है, न कि इस बात में कि उसका स्वामित्व किसके पास है। यदि हम इस गहरे सत्य को समझ लें और अपने व्यवहार में उतार लें, तो न केवल हमारे तीर्थ विवादों और विभाजन से सुरक्षित रहेंगे, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी एक ऐसे जैन समाज को देखेंगी जो सशक्त, समृद्ध और एकजुट होगा। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें ऐसा वातावरण दें जहाँ धर्म जोड़ने का माध्यम बने, न कि बाँटने का कारण। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने अहंकार और संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर, एकता और समर्पण के मार्ग को अपनाएँ। धर्म को जोड़ने दें, बाँटने नहीं।

जैन समाज को समर्पित प्रतिभा आशीष जैन (अधिशासी अभियंता) का भावभीना अभिनंदन

पारस जैन 'पार्श्वमणि'/ संवाददाता, कोटा

सिंगोली (मध्यप्रदेश)। सिंगोली मध्य प्रदेश में संत शिरोमणि आचार्य 108 विद्या सागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज के सानिध्य में पंच कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास के गरिमामय वातावरण में चल रहा है। पंच कल्याणक समिति द्वारा माननीय ऊर्जा मंत्री महोदय, राजस्थान सरकार, श्री हीरा लाल जी नागर, विधायक महोदय श्री वीरेंद्र जी नीमच और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भगवत सिंह जी हिंगड साहब' की गरिमामय उपस्थिति में 186 -B, आर के पुरम, कोटा निवासी श्री विमल चंद जी (सेंट्रल बैंक, Retd.)-कमलेश जी जैन (वरिष्ठ अध्यापिका, Retd.) के सुयोग्य सुपुत्र श्री आशीष जैन, अधिशासी अभियंता राणा प्रताप सागर जल विद्युत परियोजना (RPS Hydel Power Station) का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। विगत 35 वर्षो से पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लखनीय योगदान देते आ रहे राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन 'पार्श्वमणि' ने जानकारी देते हुये बताया कि श्री आशीष जैन की धर्म पत्नी

श्रीमती डॉक्टर निधि जैन वर्तमान में राजस्थान परमाणु बिजलीघर चिकित्सालय में अस्पताल अधीक्षक एवं स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही पुत्र हार्दिक जैन AIIMS जोधपुर से MBBS, तथा पुत्री डॉक्टर प्रेक्षा जैन महात्मा गांधी मेडिकल एंड साइंस कॉलेज इंदौर (MP) से PG कर रही है। श्री आशीष जैन की प्रारंभिक शिक्षा लगभग पांच हजार जैन भजनों के रचयिता जैन संगीत सम्राट स्वर्गीय श्री नमजी जैन बकानी जो कि इनके नाना जी हैं, की देखरेख में हुई है। श्री नमजी जैन द्वारा कई जिन पूजन, आरतियां, चालीसा आदि लिखे गये हैं, प्रसिद्ध जैन भजन पारस प्यारा लागो जी-चवलेश्वर प्यारा लागो, या चांदखेड़ी म्हाने तो उजाली लागे छे आदि अनेकानेक भजन लिखे गये हैं, जो कि पूरे भारतवर्ष के जैन समाज में प्रचलन में हैं।

जैन समाज दिल्ली का तीन दिवसीय महावीर जयंती समारोह संपन्न

रमेश चंद्र जैन

नई दिल्ली। जैन समाज दिल्ली का तीन दिवसीय महावीर जयंती समारोह 29 से 31 मार्च तक लालकिला ग्राउंड में आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनिराज के सान्निध्य में धूमधाम से मनाया गया। प्रमोद जैन-वर्धमान एवं डा. एस. के. सोगानी के ध्वजारोहण से शुरू समारोह में समाज के अध्यक्ष चक्रेश जैन ने आचार्य श्री को विनयांजलि अर्पित की। आचार्य श्री ने कहा कि भगवान महावीर के उपदेशों को आचरण में लाकर ही वर्तमान की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। हमें अपने आहार-व्यवहार को सुधारना होगा। मुख्य अतिथि रेसलिंग वर्ल्ड चैंपियन संग्राम सिंह ने आचार्य श्री को भावभीनी विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भगवान महावीर, राम व अन्य महापुरुषों से ही हमें प्रेरणा मिलती है। मैं पूर्णतया शाकाहारी हूं, शाकाहार में अदभुत शक्ति है। खुश रहना है तो प्रकृति के साथ जिएं। समारोह में क्षुल्लक विशराक्ष सागरजी भी मौजूद थे। भारतवर्षीय दि. तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन भी मौजूद थे। अगले दिन आचार्य श्री श्रुतसागरजी ने कहा कि भगवान महावीर का मुख्य उपदेश यही था कि जो तुम अपने लिए चाहते हो, वही दूसरों के लिए भी चाहो। संकल्पी

हिंसा से बचो, संयम का पालन करते हुए पुरूषार्थ करते रहो। डा. जयकुमार जैन उपाध्ये ने आचार्य श्री विद्यानंद जी द्वारा महावीर जन्मभूमि वासोकुंड-वैशाली के विकास में योगदान को याद किया। वर्धमान शिक्षा मंदिर दरियागंज की प्रिंसीपल सीमा कांडवाल, मैनेजर चारू जैन, शुभा जैन व शालिनी जैन के संयोजन में 20 स्कूलों की चित्रकला प्रतियोगिता हुई जिसमें 500 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। मेघा जैन व अंजु जैन ने भक्ति-नृत्य प्रतियोगिता कराई। तीसरे दिन जैन समाज दिल्ली की 118 वर्ष पुरानी भव्य परंपरागत शोभायात्रा निकाली गई जो पहाड़ी धीरज, खारी बावली, फतेहपुरी, चांदनी चौक होते हुए लालकिला ग्राउंड में आई। समाज के चारों सम्प्रदायों ने एकता का अदभुत परिचय दिया। यहां लाल मंदिर के मैनेजर पुनीत जैन एवं संत प्रभुदास के संयोजन में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में कई धर्मों के संतों-इस्कान के विभुकेश दासजी, बौद्ध भिक्षु ताशिखेतुपजी, बीके कपिलजी, महंत नंदलालजी, नीलकंठदासजी, गुरूद्वारा शीशगंज के सिख गुरूओं आदि सभी ने एक स्वर से कहा कि अहिंसा ही विश्वशांति का मूल आधार है। भगवान महावीर का मुख्य संदेश ''जियो और जीने दो'' से ही विश्व में शांति संभव है। आचार्य श्री ने सभी संतों का स्वागत करते हुए कहा कि सारे धर्मों का सार विश्व शांति ही है। परस्पर उपकार करके ही हम शांति से जी सकते हैं। सभी संतों ने एक साथ अहिंसा और शांति के प्रतीक रूप में सैंकड़ों श्वेत कबूतर आकाश में उड़ाए। भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का अनेक पुजारियों ने अभिषेक व पूजन किया। समारोह में दिगंबर जैन परिषद के अध्यक्ष अनिल पारसदास जैन, श्वेतांबर स्थानकवासी समाज के उपाध्यक्ष सुभाष जैन ओसवाल, सुखराज सेठिया, एससी जैन-जज, स्वदेश भूषण जैन, मनोज जैन-मनोनीत निगम पार्षद, नीरज जैन, पीके जैन, जिनेंद्र जैन, रमेश जैन, अंकुर, पंकज जैन, कविता जैन आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। लाल मंदिर को भव्य रोशनी से सजाया गया। संयोजन जैन मित्र मंडल ने किया।

अचलपुर में पंचकल्याणक सम्पन्न

डॉ. सुनील जैन संचय

अचलपुर (अमरावती)। परम पूज्य पट्टाचार्य, आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज के मंगल शुभाशीष से श्री मज्जिनेन्द्र वर्द्धमान जिनबिम्ब पंचकल्याणक मानस्तंभ प्रतिष्ठा एवं विश्वशांति महायज्ञ महोत्सव परम पूज्य उपनयन संस्कार प्रणेता, प्राचीन जिनतीर्थ जीर्णोद्धारक, श्रमण श्री सुप्रभसागर जी महाराज संसंघ के सानिध्य में राजा ईल की ऐतिहासिक धर्मनगरी, श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि की तलहटी में स्थित अचलपुर (अमरावती) महा. में 28 मार्च से 02 अप्रैल तक पंडित मुकेश शास्त्री विनम्र, गुरुग्राम एवं पंडित अखिलेश शास्त्री 'सुप्रज्ञ' रमगढ़ा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

जिसमें सौ. मीना-किरण गरीबे अमरावती को महाराजा सिद्धार्थ-महारानी त्रिशला, श्रीमती डिम्पल-संजय छाबड़ा छिंदवाड़ा को सौधर्म शची, सौ विशाखा-विकाश रायबागकर परतवाड़ा को धनपति कुबेर, सौ. प्रियंका-राजेश हनुमंते अमरावती को महा यज्ञनायक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महामुनि वर्धमान जी को प्रथम पारणा करने का सौभाग्य रविन्द्र गहाणकर राष्ट्रीय अध्यक्ष उत्कर्ष समूह (भारत) को महाराजा कूल बनकर प्राप्त हुआ।

नवीन मानस्तंभ का पुण्यार्जन श्रीमती राजकुमारी, ऋषभ-रिद्धिमा, आदित्य, आराध्या जैन, श्रेयांश टॉकीज परिवार छिंदवाड़ा को प्राप्त हुआ।

अचलपुर की दिशा ईशान, वहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।

साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं तसु पाय।।

वही अचलपुर जिससे श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तगिरि (मेंढगिरी) का नाम प्रसिद्धि को प्राप्त होता है, वहीं अचलपुर जहां (52) बावन मुहल्लों में राजा इल (इल) ने बावन जिनमंदिर बनवाए थे, जहां पर ऐसी सुरंग थी जो श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तगिरि तक ले जाती थी। वर्तमान में सामाजिक उदासीनता, आपसी विकल्प समाज विरोधी संगठनों एवं देखरेख के अभाव में मात्र तीन ही मंदिर शेष रहे हैं, वे भी जीण- शीर्ण अवस्था को प्राप्त हो रहे हैं, पूर्वजों की वह धरोहर बाट जोह रही है अपने जीर्णोद्धार की।

अचलपुर में आज भी जहां-तहां जमीन की खुदाई में प्राचीन जिनप्रतिमा एवं जिन मंदिरो के अवशेष प्राप्त होते रहते हैं।

टक्कर चौक स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अचलपुर का मंदिर भी उन तीन मंदिरों में से एक है। श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तगिरि की वंदना के उपरांत विहार करते हुए परम पूज्य मुनि श्री सुप्रभ सागर जी के चरण इस क्षेत्र पर पड़े और निर्माण का कार्य परम पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ ही प्रारंभ हो चुका है।

सारांश भैया की मुनि प्रमाण सागरजी के कर कमलों से होगी जैनेश्वरी दीक्षा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

6 अप्रैल, जयपुर। मानसरोवर एस. एफएस दिगम्बर जैन मंदिर राजावत फार्म मानसरोवर के धर्म प्रेमी परिवार श्री ज्ञानचंद जी श्रीमती प्रेम देवी जी हल्देनिया के सुपौत्र ब्रह्मचारी भैया श्री सारांश जैन पुत्र श्री राकेश जी सुनीता जी 134 सुमेर नगर सेकंड की भव्य जैनेश्वरी दीक्षा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुणायतन प्रणेता मुनि 108 श्री प्रमाण सागर जी महाराज के कर कमलों द्वारा नगर गौरव बाल ब्रह्मचारी सारांश भैया को भव्य जैनेश्वरी दीक्षा दिनांक 18.04.2026 को सम्मेद शिखर में दी जाएगी। यह पावन समय निर्विघ्न सानंद संपन्न हो इस भावना के साथ आज मंदिर समिति के महामंत्री सौभागमल जैन, संगठन मंत्री रजनीकांत, प्रचार मंत्री सुरेंद्र पाटनी, कार्यकारिणी सदस्य मनोज लुहाड़िया, संदीप गंगवाल, लालचंद झांझरी, ब्रह्मचारी भैया के पिताजी राकेश जैन, बड़े भैया आयुष जैन, अशोक कासलीवाल सुरेंद्र जी हल्देनिया, रोशन जी गोधा तथा पारस जैन सहित सभी ने पार्श्वनाथ भगवान की वेदी पर सामूहिक पूजन कर श्रीफल चढ़ाया। इस खुशी के मांगलिक कार्यक्रम पर दिनांक 09.04.2026 को सायंकाल 07 से 10 श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एसएफएस पर भव्य भक्ति संध्या का कार्यक्रम रखा गया।

राजाबाजार जैन मंदिर में मंगलमय वातावरण में प्रवचनमाला प्रारंभ

एम. सी. जैन, पत्रकार, चिकलठाणा

औरंगाबाद। राजाबाजार जैन मंदिर परिसर में सकल जैन समाज की उपस्थिति में धर्मगुरु आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी गुरुदेव तथा क्षुक श्री पर्वसागरजी एवं क्षुल्लक श्री प्रशांतसागरजी के पवित्र सान्निध्य में मंगल प्रवचनमाला की तृतीय श्रृंखला अत्यंत भक्तिभाव से संपन्न हुई।

इस अवसर पर दीप प्रज्वलन परम गुरु भक्त श्री भरतवीर मिंडा, श्री रमेशजी ढोटिया (मुंबई पंचायत अध्यक्ष), श्री महावीरजी पाटनी, शांतिसागर पुरस्कार से सम्मानित महावीरजी ठोले, पंचायत ट्रस्टी अरुणजी पाटनी, सर्राफा जैन मंदिर के अध्यक्ष मुकेशजी साहूजी, किरण पहाड़े, विमलदादा मंदिर के अध्यक्ष श्री अनिलमामा संचेती, श्री संजयजी संचेती तथा राजाबाजार स्वाध्याय व महिला मंडल की शोभा लोहाड़े, शकुंतला बोहरा, सरोज पहाड़े, संगीता सेठी, अरुणा गंगवाल, विद्या सवाजी, अनीता पाटनी, निर्मला पाटनी, ज्योति कासलीवाल, सुनीता पांडे, प्रतिभा कासलीवाल, जयश्री गंगवाल, संगीता गंगवाल, सरला झाझरी, चंदा पहाड़े, छाया दगड़ा, नगिना अजमेरा, कनक ठोले, अनीला ठोले, सुरेखा पाटनी, माला पाटनी, संगीता कासलीवाल, काशमीरा लोहाड़े आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी का सुखी जीवन पर अमृतमय प्रवचन हुआ।

राजाबाजार जैन मंदिर में आयोजित इस प्रवचनमाला में आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी गुरुदेव ने 'सुखी जीवन' विषय पर अत्यंत प्रेरणादायक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि सच्चा सुख बाहरी संपत्ति में नहीं, बल्कि मन की शांति, संयम और संतोष में होता है। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में स्पष्ट किया कि यदि मनुष्य लोभ, क्रोध, अहंकार और मोह पर नियंत्रण रखें तभी वह जीवन में सच्चा आनंद प्राप्त कर सकता है। क्षमा, करुणा, दया और सत्य जैसे मूल्यों को अपनाने से जीवन अधिक सुंदर और संतोषजनक बनता है। उन्होंने आगे कहा कि 'अधिक पाने की दौड़ में मनुष्य अपना सुख खो देता है, जबकि जो व्यक्ति जो है उसमें संतोष रखता है और धर्म के मार्ग पर चलता है, वही वास्तव में सुखी होता है।'

इस प्रवचन से उपस्थित जैन समाज को जीवन जीने का नया दृष्टिकोण मिला और कई लोगों ने अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लिया। इस प्रेरणादायक प्रवचनमाला का लाभ लेने के लिए सभी से परिवार सहित अधिक संख्या में उपस्थित रहने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम का संचालन सचिव प्रकाश अजमेरा ने प्रभावी रूप से किया। सुबह भगवान शांतिनाथ का अभिषेक अत्यंत श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ।

अमृत महोत्सव में प्रबुद्धजनों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

5 अप्रैल। दुर्गापुरा दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में तीर्थंकर ग्रुप के अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक डा. एम एल जैन 'मणि'-डा. शान्ति जैन 'मणि' व मुनि भक्त रमेश चन्द अजमेरा-श्रीमती सुमति अजमेरा (माता-पिता) श्री यशकमल अजमेरा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष फेडरेशन इन्दौर) ने दुर्गापुरा के दिगम्बर जैन मंदिर जी में प्रज्ञा सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में हुये अमृत महोत्सव में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में डाक्टर मणी जैन ने बताया कि इस प्रकार का जयपुर में पहली बार आयोजन हुआ है, उक्त कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन श्री यशकमल अजमेरा जी ने किया। कार्यक्रम में आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज ने इस कार्यक्रम का महत्व बताया व इस प्रकार के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में करीब 60 जोड़े अपने परिवारजनों के साथ आये। मुनि श्री के दिशा निर्देशन में इस आयोजन की शुरुआत हुई। सबसे पहले महाराज ससंघ के 4 महाराज-माताजी से इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई, बाद में श्रावकों का नम्बर आया, महाराज के निर्देशन से सबसे पहले सभी 65 वर्ष से ऊपर के 60 दम्पति जोड़े आये उनके पुत्र व पुत्रवधु व अन्य घर के लोगों को अपने माता-पिता को तिलक लगाने को कहा, फिर उनको मोतियों के कण्ठे-माला पहनाये गये, बाद में दुपट्टे पहनाये गये फिर उनके बेटे बहुओं ने साफा पहनाया, इसके बाद शाल ओढ़ाया गया। मुनि महाराज ने फिर माता-पिता का पांव ऊपर उठवाकर थाल में रख पांवों को पुत्र-वधुओं को धोने के लिए कहा, सभी ने इस प्रकार से अपने माता-पिता को सम्मानित कर अपने को

धन्य किया। बाद में सभी को खड़ा कर गले मिलने को कहा व माता-पिता को आशीर्वाद देने को कहा, इस प्रकार यह कार्यक्रम संपन्न हुआ फिर महाराज ने सभी को मंदिर जी में भगवान के दर्शन के लिए भेजा। सभी ने भगवान के दर्शन किए व आयोजकों की तरफ से वात्सल्य भोज किया।

वात्सल्य ऐसा हथियार बड़े से बड़े दुश्मन को भी मित्र बना देता है: मुनिश्री प्रज्ञान सागरजी

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता

बूंदी, 8 अप्रैल, 2026। जिला बूंदी के देवपुरा बघेरवाल दिगंबर जैन मंदिर में धर्म सभा को संबोधित करते हुए जैन संत ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य महिलाओं के पास मन की वाणी का वात्सल्य एक ऐसा हथियार है जिसे चाहे तो वह प्यार बड़ा सकता है चाहे तो दुश्मन उत्पन्न कर सकता है। संत ने यह भी बताया कि अपने घर को स्वर्ग से सुंदर बनाने के लिए परिवारजन जब भी बाहर से आए मीठी वाणी से ही अपना व्यवहार ऐसा बनाएं कि अपना घर स्वर्ग से सुंदर लगने लगे। जब भी आप किसी से बात करें क्रोध आवेश में आकर न करें, अपने शब्दों पर

विवेक पूर्वक मीठे वचन ही प्रयोग में करें। आप मीठे वचनों के प्रभाव से आपका जन्म जन्म का दुश्मन भी उसके मन के अंदर आपके प्रति श्रद्धा प्रेम वात्सल्य उत्पन्न होगा और वह आपका मित्र बन जाएगा। जब भी आप व्यापार के लिए निकलते हैं या शॉप पर जाते हैं तो वहां पर ग्राहक से भी मीठे वचन मीठी भाषा का प्रयोग करें जिससे उसे अपनापन लगे और उसे आप लाभ प्राप्त करोगे। अपनी वाणी सबसे बड़ा अपना आभूषण है। मुनि प्रसिद्ध सागर महाराज ने धर्म सभा में बताया कि मनुष्य के गहने उसका आभूषण नहीं होता, शोभा तो अपनी वाणी से अपने शब्दों से होती है। जहां भी उसे सम्मान सत्कार मिलेगा अपनी वाणी से मिलेगां आभूषण से कभी सम्मान मिलने वाला नहीं है। जब भी मनुष्य अपने मुख से मीठी वाणी का प्रयोग करता है तब लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। कठोर वचन, कड़वी वाणी बोलने पर कोई भी लोग जीवन में प्रशंसा नहीं करते बल्कि आलोचना करते हैं। अपार भक्तों ने जिनालय में मुनियों की जय जयकार की।

स्वास्थ्य सेवा की अनूठी पहल- पांच दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का हुआ सफल आयोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

29 मार्च, जयपुर। सामाजिक सरोकार और मानव सेवा की भावना को साकार करते हुए श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर मानसरोवर, ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.) एवं मेट्रो मास हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल समापन हुआ। कार्यक्रम में 29 मार्च से 3 अप्रैल 2026 तक आयोजित इस शिविर में क्षेत्र के लगभग 1800 लोगों ने भाग लेकर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया, शिविर के दौरान मरीजों की विभिन्न जांचें जैसे ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर एवं ईसीजी निःशुल्क की गई तथा योग्य चिकित्सकों द्वारा परामर्श और दवाइयों का वितरण भी निशुल्क किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस पर माननीय नगेंद्र कुमार जैन साहिब (पूर्व न्यायाधीश, कर्नाटक एवं मद्रास हाईकोर्ट तथा राजस्थान हाईकोर्ट) की गरिमामय उपस्थिति रही, जिससे आयोजन की गरिमा और अधिक बढ़ गई। चिकित्सा संयोजक प्रमोद जैन भँवर ने बताया कि इस प्रकार के आयोजन समाज के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, जिससे जरूरतमंद लोगों को समय पर चिकित्सा सुविधा मिल सके।

ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट की कोषाध्यक्ष मनीषा जैन के सहयोग से शिविर का संचालन सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। वहीं डॉ. हनुमान सिंह (जनरल फिजिशियन) ने मरीजों की जांच कर उन्हें स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सुझाव प्रदान किए, कार्यक्रम में मंदिर समिति के सुमित जैन (अध्यक्ष), अशोक जैन (मंत्री), पवन जैन (संयोजक) एवं नवरत्न जैन (सह-संयोजक) के सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। शिविर में लाभान्वित हुए लोगों ने आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए ऐसे आयोजन निरंतर आयोजित करने की अपेक्षा जताई।

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः।।

पेन्टर मधुसूदन एण्ड कम्पनी

(जैन कला विशेषज्ञ)

कुमावत कॉलोनी, बिहारी पोल, नया शहर किशनगढ़ (अजमेर) राज.

मो. 9828333966, 9461509807,

फोन: 01463-245195

www.jainartsblogspot.com

मन्दिरों में कांच कार्य, कांच पर मीनाकारी कार्य, गोल्डन कांच का कार्य, मार्बल डेरियों पर स्वर्ण कार्य तथा सभी तरह के स्वर्णयुक्त चित्र बनवाने एवं समस्त प्रकार के कलात्मक कार्य हेतु सम्पर्क करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.

28, बैरकपुर ट्रन्क रोड

कोलकाता- 700002 'प.बं.'

फोन : 25577534

लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन का कमांडिंग-इन-चीफ के पद पर चयन

लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन (AVSM, SM) ने 1 अप्रैल 2026 को भारतीय सेना की प्रतिष्ठित सदर्न कमांड के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ (GOC-in-C) के रूप में पुणे में कार्यभार ग्रहण किया। वे देश के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण सेना कमानों में से एक का नेतृत्व कर रहे हैं, जो रेगिस्तान से लेकर तटीय सीमा तक की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालता है।

लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन के बारे में मुख्य जानकारी-

पद: लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन अब सदर्न कमांड के नए चीफ (Army Commander) हैं। उन्होंने 1 अप्रैल 2026 को पदभार संभाला।

पूर्व जिम्मेदारी: इस पद से पहले, वे भारतीय सैन्य अकादमी (IMA) के कमांडेंट थे।

अनुभव: जम्मू-कश्मीर में 16 कोर के साथ काम करने सहित उनके पास परिचालन का लंबा अनुभव है।

सेवा: वे 1985 में जम्मू-कश्मीर राइफल्स की 17वीं बटालियन में कमीशन हुए थे (कुछ रिपोर्टों के अनुसार, वे महार रेजिमेंट से भी संबंधित हो सकते हैं)।

सम्मान: उन्हें एवीएसएम (Ati Vishisht Seva Medal) और एसएम (Sena Medal) से सम्मानित किया जा चुका है।

सदर्न कमांड की भूमिका: यह कमान देश के रेगिस्तानी क्षेत्रों, क्रीक सेक्टर और लंबी तटीय सीमा की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत्परिषद् के त्रैवार्षिक चुनाव संपन्न
प्रो. अशोक कुमार जैन सर्वसम्मति से पुनः अध्यक्ष बने

डॉ. सुरेंद्र जैन भारती

अहमदाबाद। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत्परिषद् (रजिस्टर्ड) के त्रैवार्षिक चुनाव श्री पारसनाथ जैन बाड़ी, हाटकेश्वर, अहमदाबाद में चुनाव अधिकारी प्राचार्य महेन्द्र कुमार जैन मुरैना की देखरेख में गरिमामय एवं सर्वसम्मत वातावरण में सम्पन्न हुए। चुनाव प्रक्रिया में सर्वसम्मति से प्रोफेसर अशोक कुमार जैन (वाराणसी) को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। इसके साथ ही संगठन के अन्य पदाधिकारियों का भी मनोनयन किया गया, जिसमें कर्मयोगी प्रो. सुरेन्द्र जैन भारती (बुरहानपुर) को उपाध्यक्ष, प्रो. विजय कुमार जैन (नई दिल्ली) को कोषाध्यक्ष तथा विद्वत् श्री संजीव कुमार जैन (महरौनी) को महामंत्री बनाया गया।

इसी क्रम में डॉ. किरणप्रकाश जैन (सांगानेर) को संयुक्त मंत्री, डॉ. पंकज कुमार जैन शास्त्री (इंदौर) को प्रकाशन मंत्री, विद्वत् श्री अमित जैन शास्त्री (जबलपुर) को उपमंत्री एवं डॉ. सुनील कुमार जैन 'संचय' (ललितपुर) को प्रवक्ता पद की जिम्मेदारी सौंपी गई।

कार्यकारिणी सदस्य के रूप में प्रो. कमलेश कुमार जैन (जयपुर), ब्र. डॉ. धर्मेंद्र जैन (जयपुर), डॉ. संतोष (सीकर), डॉ. पुलक गोयल (जबलपुर), डॉ. ज्योति जैन (खतौली), विद्वत् श्री अशोक शास्त्री (इंदौर), प्राचार्य सतीश जैन (सांगानेर), डॉ. सुमत जैन (उदयपुर), डॉ. सतेन्द्र जैन (जयपुर), डॉ. राजेन्द्र चिन्तामणि (नागपुर), डॉ. अरिहंत जैन (मुंबई), विद्वत् श्री आकाश जैन (चौरई) एवं विद्वत् श्री जितेंद्र जैन (अहमदाबाद) को मनोनीत किया गया।

विशेष आमंत्रित सदस्यों में प्राचार्य महेन्द्र जैन (मुरैना), डॉ. प्रदीप (दमोह), डॉ. आशीष जैन (दमोह), विद्वत् श्री वैभव मैत्रेय (जालना), डॉ. अरिहंतशरण (बिलासपुर), डॉ. नीलम सर्राफ (ललितपुर), विद्वत् श्री आलोक शास्त्री (बड़ामलहरा दिल्ली) एवं विद्वत् श्री नवीन बाबू जैन (झांसी) को शामिल किया गया।

नवनिर्वाचित सभी पदाधिकारियों ने पूज्य उपाध्याय श्री सुदत्तसागर जी महाराज एवं प्रसन्नमनः मुनि श्री प्रणुतसागर जी महाराज से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर पार्श्वनाथ जैनवाड़ी, हाटकेश्वर एवं सम्यक्ज्ञान प्रभावना समिति द्वारा सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों का भव्य बहुमान एवं सम्मान किया गया। कार्यक्रम में विद्वत समाज के अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे तथा नवगठित कार्यकारिणी से संगठन की गतिविधियों को और अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाने की आशा व्यक्त की गई।

कार्यकारिणी की बैठक प्रोफेसर अशोक कुमार जैन की अध्यक्षता में आयोजित की गई। रात्रि में परिषद का खुला अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसमें विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर परिषद के सदस्यों ने अपने सुझाव-विचार रखे।

विश्व नवकार दिवस का भव्य ऐतिहासिक आयोजन

पारस जैन 'पार्श्वमणी', संवाददाता

नई दिल्ली। 9 अप्रैल गुरुवार को पूरे विश्व के 108 से अधिक देशों में 6000 से अधिक मंदिरों, स्थानकों, उपासरों, स्वाध्याय भवनों एवं अन्य स्थलों पर विश्व नवकार दिवस के अवसर पर प्रातः 8:01 बजे से 9:36 बजे तक णमोकार महामंत्र का जाप किया गया। विगत 35 वर्षो से पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले राष्ट्र गौरव पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार कोटा ने जानकारी देते हुये बताया कि मुख्य कार्यक्रम विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित हुआ जहाँ मुख्य अतिथि के रूप में गृह मंत्री अमित शाह जी उपस्थित हुए और इस महामंत्र के महत्व को बताया। इस अवसर पर जीतो अपैक्स के चेयरमैन पृथ्वीराज कोठारी, अध्यक्ष विजय भंडारी, मुख्य सचिव ललित डांगी सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने माननीय गृहमंत्री का स्वागत कर मोमेंटो भेंट किया और 9 अप्रैल को विश्व नवकार दिवस घोषित करने का आग्रह किया। कोटा में 5000 से अधिक सदस्यों ने, एलेन सत्यार्थ में फाउंडर डायरेक्टर राजेश जी माहेश्वरी, गीता भवन में भाजपा नेता और सोशल एक्टिविस्ट पंकज जी मेहता, एक्जोटिका रिसॉर्ट्स में डॉ. जितेंद्र जी भंडारी के साथ मिलकर नमोकर महामंत्र का जाप किया और इस मंत्र की महिमा और उपादेयता पर प्रकाश डाला। अकलंक स्कूल में मेघना जी ने बच्चों को आसान शब्दों में नमोकार महामंत्र का अर्थ समझाया और सभी ने साथ में वाचन किया। जीटो कोटा चैप्टर चेयरमैन पंकज सेठी और मुख्य सचिव नरेंद्र जैन ने बताया कि इस अवसर पर कोटा में पूर्व चेयरमैन डॉ. जे के सिंघवी, वाईस चेयरमैन पवन जैन, कोषाध्यक्ष नकुल जैन सहित संयोजक मनोज जैन, पंकज जैन, नितेश जैन, डॉ. समीर मेहता, गजेंद्र जैन, अतुल सेठिया, ध्याता जैन बजाज, नरेश जैन वैद, रेखा हिंगड़ सहित सभी सदस्यों ने विभिन्न स्थलों पर उपस्थित रहकर मंत्र का जाप किया। लेडिस विंग चेयरपर्सन मंजू लुंकड़ और मुख्य सचिव रेखा जैन ने बताया कि चित्रा बागरेचा, निशा जैन वैद, अनिता जैन, सुमन मुनोत, नीरा जैन, प्रिया सेठी आदि सभी सदस्याओं ने नवकार मंत्र वाचन किया और व्यवस्थाओं में सहयोग किया। पारस जैन ने आगे बताया कि यूथ विंग चेयरमैन सिद्धार्थ जैन, मुख्य सचिव ईशान गोधा, अतिवीर जैन, अक्षत जैन, निशांत जैन, अभिषेक जैन टोरड़ी, प्रासुक जैन, शुभम जैन आदि ने एक्जोटिका रिसॉर्ट्स और अकलंक स्कूल में उपस्थित रहकर कार्यक्रम के आयोजन में मुख्य भूमिका निभाई। अंत में रेखा हिंगड़ द्वारा मांगलिक सुनाई गई।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. मुझे किसी ने बताया कि मेरी कुंडली में राहु की दशा चल रही है, राहु की दशा कितने वर्ष के लिये आती है - देशभूषण जैन, दिल्ली

उत्तर: देशभूषण जी, आप की कुंडली मे राहु की नहीं 16 साल की गुरु की दशा चल रही है, वैसे राहु की दशा 18 वर्षों के लिये आती है।

प्रश्न 2. अगर कुंडली में मंगल नीच का बैठा हुआ हो तो क्या समस्या आती है - शंकर लाल, लखनऊ

उत्तर: अगर कुंडली में मंगल नीच का बैठा हो तो उस जातक को क्रोध तो अवश्य आता है। अन्य कुंडली के अवलोकन के बाद पता चलता है।

प्रश्न 3. हम तीन बहन भाई हैं मगर एक की भी शादी का योग नहीं बन रहा है। जल्दी शादी हो हमें इसके लिये क्या करना चाहिये - विद्या जैन, रायपुर

उत्तर: विद्या जी, आप तीनों भाई-बहनों को नवग्रह शान्ति करना चाहिये तथा हल्दी का टीका माथे पर रोजाना लगायें तथा आदिनाथ चालीसा पढ़ें।

प्रश्न 4. मेरे बेटे की उम्र मात्र 12 साल है और वो स्कूटी मोटर साइकिल चलाने की जिद करता है, क्या मुझे उसे छूट दे देनी चाहिये - माकन जैन, फरीदाबाद

उत्तर: माकन जी, अभी आपको चाहिये कि बेटे को स्कूटी मोटर साइकिल से दूर रखें क्योंकि उसकी कुंडली में नीच के मंगल की दशा चल रही है अत: सावधानी अवश्य रखें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र- 9990402062, 8826755078

आदरणीय रमन जैन जी (डायरेक्टर -अपेक्स एवं जोन चेयरमैन-जीतो नॉर्थ जोन) का महासभा कार्यालय में आगमन, गजराज जैन गंगवाल को विश्व नवकार महामंत्र दिवस का

पवन जैन गोधा, राष्ट्रीय महामंत्री-महासभा

आदरणीय श्री रमन जैन जी, जो कि जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (JITO) के चेयरमैन, निदेशक एवं उत्तरी क्षेत्र के अध्यक्ष हैं, जीतो एपेक्स की ओर से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के कार्यालय पधारे। इस अवसर पर उन्होंने आगामी विश्व नवकार महामंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विज्ञान भवन, कर्तव्य पथ, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम हेतु श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी को सादर निमंत्रण प्रदान किया तथा उन्हें स्मृति-चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा-राष्ट्रीय अध्यक्ष-आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी, राष्ट्रीय महामंत्री -श्रुत संवर्धिनी श्री शरदराज कासलीवाल जी, ट्रस्टी श्री अजित कुमार जैन पांड्या जी, ट्रस्टी श्री अशोक जैन चूड़ीवाल जी (असम) एवं उपाध्यक्ष-श्री पुनीत जैन जी द्वारा श्री रमन जैन जी का सम्मानपूर्वक अभिनंदन एवं हार्दिक स्वागत किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्व नवकार महामंत्र दिवस के उपलक्ष्य में श्री रमन जैन जी एवं आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने अपने प्रेरणादायक विचार व्यक्त करते हुए समाज को एकता, सेवा एवं संगठन के मार्ग पर निरंतर अग्रसर रहने का संदेश दिया।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुरुलिया जैन मंदिर आगमन

पाकबीरा के विकास हेतु समर्थन से समाज गौरवान्वित

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

पुरुलिया। पुरुलिया स्थित जैन मंदिर परिसर में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की गरिमामयी उपस्थिति ने संपूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित किया। मुख्यमंत्री के इस विशेष दौरे से समाज के सदस्यों में हर्ष और उत्साह का वातावरण देखा गया। भ्रमण के दौरान मुख्यमंत्री ने ऐतिहासिक पाकबीरा जैन मंदिर के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया, जिसे जैन तीर्थों के संरक्षण की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। मुख्यमंत्री का यह सकारात्मक रुख जैन धर्मावलंबियों के लिए विशेष सम्मान की बात है। इस गौरवशाली और शुभ अवसर पर विद्या दश मंडली (लेडीज विंग - पुरुलिया दिगंबर जैन) की प्रतिनिधि दीपा जैन के साथ अनिल जैन एवं अशोक जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। इन गणमान्य प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और समाज की ओर से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। सकल दिगंबर जैन समाज के संयोजक दिनेश कुमार जैन (गंगवाल) द्वारा साझा की गई जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री का यह दौरा और जैन समाज के प्राचीन स्थलों के प्रति उनकी संवेदनशीलता पूरे समाज के लिए आनंद और गर्व का विषय है। पाकबीरा जैसी ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति शासन का यह सहयोग क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को नई ऊँचाइयां प्रदान करेगा।

अनंत आनंद की खान है चेतन भगवान

मार्ग सीधा है पर सीधे परिणाम वालों को मिलता है

जिसकी जैसी होनहार वैसे वो होगा पार

देह छूटेगी पर पहले ही यदि देहदृष्टि छूट जाए तो कष्ट नहीं होता

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000
महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985
कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com
सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक
प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
लोगुज्जोयरा धम्म तित्थयरे जिणवरेय अरहंते।
कित्तण केवलिमवे य उत्तमबोहि मम दिसंतु॥

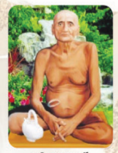
चरित्र चक्रवर्ती
आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

स्मृति दिवस श्री निर्मलकुमार जैन सेठी

जैन धरोहर दिवस

स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी
(8 जुलाई, 1938 – 27 अप्रैल, 2021)

मान्यवर
सादर जयजिनेन्द्र,
श्रावकरत्न, कर्मयोगी, देव, शास्त्र और गुरु के अनन्य उपासक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक श्री निर्मलकुमार जी जैन सेठी की पंचम पुण्यतिथि के अवसर पर सेठी ट्रस्ट और श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की ओर 26 अप्रैल 2026 दिन रविवार को बंगाल की राजधानी कोलकाता में और 27 अप्रैल 2026 दिन सोमवार को पंचकोट (पंचेत पहाड) जिला पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) मे उनके कार्यों के पुण्यस्मरण एवं विनयांजलि हेतु समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उक्त पावन दिवस पर **'दर्शन एवं साहित्य'** तथा **'कला एवं पुरातत्व'** के क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाले दो विद्वानों को **'श्री निर्मलकुमार सेठी जी मेमोरियल पुरस्कार'** से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी से सादर अनुरोध है कि इस पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें विनयांजलि देने हेतु सपरिवार पधारकर हमें कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

प्रथम दिवस	द्वितीय दिवस
जैन धरोहर दिवस	**जैन धरोहर दिवस**
दिनांक : 26 अप्रैल 2026 रविवार	दिनांक : 27 अप्रैल 2026 सोमवार
अध्यक्षता	**अध्यक्षता**
श्रीमान कमल सिंह रामपुरिया	श्रीमान डा. शुभा मजमूदार
मुख्य अतिथि	**मुख्य अतिथि**
श्रीमान गजराज गंगवाल	श्रीमान प्रदीप चौपडा
समय	**समय**
दोपहर : 1:00 बजे से शाम 5:00 तक	दोपहरः 1:00 बजे से शाम 5:00 तक
स्थान	**स्थान**
धोनो धान्यो ऑडिटोरियम, अलीपुर, कोलकाता	चारुलता रिसॉर्ट, पंचकोट (पंचेत पहाड) जिला पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)

आयोजक
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
नई दिल्ली

विनीत
सेठी ट्रस्ट
नई दिल्ली । गुवाहाटी । सिलचर

संयोजक
श्री दिगम्बर जैन समाज
कोलकाता

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गज़ट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।